# संस्कृत
# मन्दाकिनी

संस्कृत

# मन्दाकिनी

## प्रथमो भागः

## एकादशवर्गीय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(विज्ञानवाणिज्य-छात्रेभ्यः)

संपादक

डॉ० कमलाकान्त मिश्र

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

**प्रथम संस्करण**
मई 2002
**बैसाख** 1924

**PD 5T ML**

SBN NO. 81-7450-054-5



**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय**

| | | | |
|---|---|---|---|
| एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस | 108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे | नवजीवन ट्रस्ट भवन | सी.डब्लू.सी. कैंपस |
| श्री अरविंद मार्ग | हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज | डाकघर नवजीवन | 32, बी.टी. रोड, सुखचर |
| **नई दिल्ली 110 016** | **बैंगलूर 560 085** | **अहमदाबाद 380 014** | **24 परगना 743 179** |

## प्रकाशन सहयोग

*संपादन* : एम.लाल
*उत्पादन* : प्रमोद रावत
राजेन्द्र चौहान
बालकृष्ण

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा अजय आफसेट प्रिंटर्स, WZ-572 C, नारायणा गाँव, नई दिल्ली - 110 028 द्वारा मुद्रित।

# पुरोवाक्

अस्माकं शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य ज्ञान-विज्ञान-महत्त्वं स्वीकृत्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादीनां विकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिकविज्ञान- मानविकी-शिक्षा-विभागेन षष्ठकक्षातः द्वादशकक्षापर्यन्तं नवीनराष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपम् आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि विकास्यन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे विज्ञानवाणिज्याधीयमानानां एकादशवर्गीयच्छात्राणां कृते प्रमुखेभ्यः संस्कृतग्रन्थेभ्यः गद्यपद्यनाटकमयान् उपयुक्तानंशान् सङ्कलय्य भूमिका-टिप्पण्यादिना समलङ्कृत्य प्रस्तूयतेऽधुना ***संस्कृतमन्दाकिनी (प्रथमो भागः)*** नामधेयं नूतनपुस्तकमिदम्।

संस्कृतभाषाज्ञानेन सह छात्रेभ्यः आयुर्विज्ञानम्, खगोलविज्ञानम्, ऋतुविज्ञानम्, रसायनविज्ञानम्, गणितशास्त्रम् इत्यादिषु विविधवैज्ञानिकविषयेषु वाणिज्यविषयेऽपि च प्राचीनभारतीयमनीषिणां मौलिकचिन्तनस्य तेषां विशिष्टयोगदानस्य च परिचयं प्रदातुं पुस्तकस्यास्य उद्देश्यं वर्तते। छात्रेषु जीवनमूल्यविकासाय अपेक्षितसुभाषितादिसामग्री अपि अत्र समाविष्टा।

अस्य पुस्तकस्य निर्माणे येषां विदुषाम् अनुभविनाम् अध्यापकानां च सहयोगः प्राप्तः, तान् प्रति परिषदियं हार्दिक्यं कार्तज्ञ्यं प्रकटयति। पुस्तकं उपयुक्ततरं विधातुं विदुषाम् अध्यापकानां परामर्शाः सदैव अस्माकं स्वागतार्हाः भवेयुः।

**जगमोहनसिंहराजपूतः**

नवदेहली — ***निदेशकः***

जनवरी, 2002 — राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

# पाठ्य-पुस्तक-निर्माण-समिति

## पाठ्यसामग्री-निर्माण-समिति

**कमलाकान्त मिश्र** — *प्रोफेसर,* संस्कृत (संयोजक)

**उर्मिल खुंगर** — *सेलेक्शन ग्रेड लेक्चरर,* संस्कृत

**कृष्णचन्द्र त्रिपाठी** — *रीडर,* संस्कृत

## पाण्डुलिपि-समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. **विद्यानिवास मिश्र**
   *पूर्व कुलपति,*
   सम्पूर्णानन्द संस्कृत
   विश्वविद्यालय वाराणसी
2. **आद्याप्रसाद मिश्र**
   *पूर्व कुलपति,*
   इलाहाबाद विश्वविद्यालय
3. **पंकज चाँदे**
   *कुलपति,* कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
   विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर
4. **कैलाशपति त्रिपाठी**
   *अवकाश प्राप्त अध्यक्ष,* साहित्य विभाग
   सम्पूर्णानन्द संस्कृत
   विश्वविद्यालय वाराणसी
5. **राजेन्द्र प्रसाद दूबे**
   *प्रोफेसर,* संस्कृत विभाग
   *राँची विश्वविद्यालय*
6. **वासुदेव शास्त्री**
   *अवकाश प्राप्त प्रभारी संस्कृत,*
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान
   एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
7. **गणेशदत्त शर्मा**
   *पूर्व प्राचार्य,*
   लाजपतराय महाविद्यालय, साहिबाबाद
8. **पुनीता शर्मा**
   *रीडर,* संस्कृत,
   श्री वेङ्कटेश्वर महाविद्यालय, नई दिल्ली
9. **एम. चन्द्रशेखर**
   *रीडर,* शिक्षाशास्त्र विभाग,
   रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यालय, जम्मू
10. **रमण कुमार शर्मा**
    *रीडर,* संस्कृत, मोतीलाल नेहरु कालेज,
    धौलाकुँआ, नई दिल्ली
11. **भास्करानन्द पाण्डेय**
    *पी.जी.टी.,* संस्कृत,
    राज. उच्च. माध्य. बाल विद्यालय,
    एस.पी.रोड, नाँगलोई,
12. **परमानन्द झा**
    *पी.जी.टी.,* संस्कृत,
    राज. उच्च. माध्य. बाल विद्यालय,
    आदर्श नगर, दिल्ली
13. **रविदत्त पाण्डेय**
    *अवकाशप्राप्त पी.जी.टी.,* संस्कृत
    राज. उच्च. माध्य. बाल विद्यालय,
    झिलमिल कालोनी, दिल्ली
14. **सन्तोष कोहली**
    *उप-प्रधानाचार्या,* सर्वोदय कन्या विद्यालय
    कैलाश एंक्लेव, रोहिणी दिल्ली
15. **कुलवन्त कौर**
    *उपप्रधानाचार्या,* केन्द्रीय विद्यालय,
    जे.एन.यू कैम्पस, नई दिल्ली
16. **दया शंकर तिवारी**
    *प्रोजेक्ट फेलो,* संस्कृत, सा.वि.मा.शि.वि.
    रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

# भूमिका

संस्कृत भाषा एवं उसका वाङ्मय प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान का आधार रहा है। यह गंभीर शास्त्रज्ञान पारलौकिक चिंतन तथा वैज्ञानिक विवेचन का एकमात्र स्रोत है। वेद, वेदांग, दर्शन, धर्मशास्त्र, नीति और व्यवसाय जैसे सर्वांगीण विषयों और सार्वजनीन तथ्यों को ऐहिक और पारलौकिक उपलब्धियों की दृष्टि से जितना संस्कृत साहित्य में एकत्र प्रस्तुत किया गया उतना अन्यत्र भाषा-साहित्य में नहीं मिलता। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि एक ओर जहाँ इसमें मानवीय संवेदना से जुड़कर काव्य की रचनाएँ हुईं वहीं दूसरी ओर विज्ञान और शास्त्रविमर्श से जुड़ी चिंतनधाराएँ भी समानांतर स्तर पर विद्वानों की लेखनी से विकसित हुईं। काव्य, नाटक तथा खगोलविज्ञान, ऋतुविज्ञान, रसायन, आयुर्वेद जैसे वैज्ञानिक विषयों का भी पल्लवन संस्कृत कविता के माध्यम से होता रहा। यहाँ तक कि जीवन-मूल्यों, वैज्ञानिक तथ्यों, वाणिज्यिक सिद्धांतों और आर्थिक, राजनैतिक विमर्शों पर भी संस्कृत की विविध विधाओं में रचनाएँ हुईं जिनमें चिंतन की गहराई है एवं समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी कामना है।

संस्कृत का महत्त्व भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी स्वीकार कर लिया गया है। संस्कृत का भाषावैज्ञानिक धरातल इनमें अन्यतम कारण है। भारोपीय भाषाओं ने बहुत सारे शब्दों को आत्मसात् कर लिया है, जिनकी व्युत्पत्ति जानने के लिए संस्कृत भाषा का अनुशीलन अपेक्षित है।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी संस्कृत भाषा और इसके वाङ्मय का महत्त्व श्लाघनीय है। मानवीय मूल्यों के संरक्षण और भारतीय अस्मिता के संवर्धन के लिए संस्कृत के अध्ययन के महत्त्व का अनुभव सभी करते हैं।

**प्रस्तुत संकलन**

संस्कृत वाङ्मय में अति प्राचीन काल से ललित साहित्य एवं जीवनमूल्यों के साथ-साथ विविध वैज्ञानिक ज्ञान गणित, रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, खगोलविज्ञान, आयुर्वेद, यंत्रविज्ञान, भूगर्भशास्त्र, वास्तुशास्त्र, अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि से सम्बद्ध प्रचुर सामग्री उपलब्ध है जो आज भी नितांत उपादेय है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संस्कृतशिक्षण कलावर्ग तक सीमित है। परिणामतः विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्र संस्कृत में निहित वैज्ञानिक ज्ञान की परम्परा से वंचित रह जाते हैं। इस कमी को दूर करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की प्रेरणा से केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के विज्ञान एवं वाणिज्य पढ़ने वाले उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए ऐच्छिक संस्कृत का एक विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया है। परिषद् द्वारा प्रकाशित 'विद्यालयीय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' 2000 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों को संस्कृत की व्यापक वैज्ञानिक एवं वाणिज्यिक चिंतन-परंपरा से परिचित कराने के लिए विशेषज्ञों एवं अनुभवी अध्यापकों द्वारा प्रदत्त परामर्श के अनुसार ग्यारहवीं कक्षा के विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्रों के लिए ***संस्कृत-मंदाकिनी (प्रथमो भागः)*** नामक नवीन पाठ्यपुस्तक प्रस्तुत है।

ग्रंथ का उद्देश्य संस्कृत के ललित साहित्य एवं जीवन-मूल्य विषयक सूक्तियों के साथ ज्योतिर्विज्ञान, रसायनविज्ञान, ऋतुविज्ञान, आयुर्विज्ञान, खगोलविज्ञान तथा वाणिज्य से संबंधित विषयों से छात्रों को परिचित कराना है। भाषा-कौशल के समुचित विकास के लिए अपेक्षित सामग्री के साथ-साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय मनीषियों के मौलिक-चिंतन एवं विशिष्ट योगदानों से छात्रों को परिचित कराना इस संकलन का उद्देश्य है। साथ ही राष्ट्रीय-गौरव की भावना को विकसित करना भी इसका अन्यतर लक्ष्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वेद, उपनिषद्, नीति, रामायण, महाभारत, नाटक, आयुर्वेद, दर्शन, ज्योतिर्विज्ञान एवं अर्थशास्त्र से संबद्ध प्रतिनिधिभूत ग्रंथों से सामग्री संकलित की गई है।

इस पाठ्यपुस्तक में सामग्री-संकलन दो दृष्टियों से किया गया है। प्रथमतः परंपरागत रूप में प्रचलित वेद, उपनिषद्, महाभारत, नाटक आदि से व्यवहारोपयोगी

अंशों का संकलन किया गया है। उनमें भी ध्यान यह रखा गया है कि प्रदत्त प्रसंग में पर्यावरण, विज्ञान, आयुर्वेद जैसे जीवनोपयोगी विषयों की विवेचना हो। पुस्तक का दूसरा पक्ष सृष्टिविज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, रसायनविज्ञान, आयुर्विज्ञान जैसे वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक तथ्यों को प्रस्तुत करता है जिनका स्रोत संस्कृतसाहित्य है। ये समस्त ग्रंथ प्रायः पद्यबद्ध हैं। तर्कसंग्रह तथा अर्थशास्त्रप्रभृति कुछ ग्रंथ गद्य खण्डों में भी उपनिबद्ध हैं।

मूलतः इस पुस्तक का संकलन संस्कृत के वैज्ञानिक साहित्य की ओर छात्रों की उत्सुकता बढ़ाने के निमित्त हुआ है। वन्दना की सामग्री, ईश की व्यापकता, राष्ट्र की समृद्धि, समता तथा पर्यावरण विषयक चेतना को जागरूक करती है। **सूक्तिसुधा** का कथ्य जीवन को व्यवस्थित तथा उन्नतिशील बनाने की प्रेरणा देता है। रामायण से संकलित पाठ्यांश मंत्रियों, सैनिकों तथा मंत्रणा की दिशा को उद्भासित करता है। महाभारत से ली गई सामग्री युधिष्ठिर और भीष्म पितामह के मध्य का संवाद है जिसमें भाग्य और कर्म में कौन प्रधान है — इस पर प्रकाश डाला गया है।

**आश्रमजीवनम्** पाठ वन में रहने वाले मुनियों के मनस्वी तथा तेजस्वी जीवन पर प्रकाश डालता है। **पंचमहाभूतानि** पाठ्यांश तर्कसंग्रह से संकलित है जिसमें पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश का विवरण बड़ी सूक्ष्मता से दिया गया है। शेष पाठ संस्कृत के वैज्ञानिक साहित्य से संबद्ध हैं।

इस संकलन में वन्दना के अतिरिक्त कुल ग्यारह पाठ हैं। वन्दना में कुल तीन वैदिक सूक्तियाँ हैं जिनमें एक ऋग्वेद से तथा शेष दो सूक्तियाँ यजुर्वेद से ली गई हैं। इनमें से एक मंत्र यजुर्वेद तथा ईशोपनिषद् दोनों में समान है। प्रथम सूक्ति में ईश की व्यापकता, द्वितीय में समता एवं समरसता तथा तृतीय में पर्यावरण के शांतिप्रद होने की प्रार्थना की गई है।

## संकलन के स्रोत

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में संकलित अंशों को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है। प्रथम चार पाठों का स्रोत वेद, उपनिषद्, कथासाहित्य, रामायण, महाभारत और नाटक हैं जो संस्कृत का साहित्यिक पक्ष है। शेष पाठों का स्रोत संस्कृत का वैज्ञानिक और वाणिज्य संबंधी साहित्य है। जिन प्रतिनिधि आचार्यों या ग्रंथों से ये

पाठ्यांश संगृहीत हैं उनका सामान्य परिचय इस प्रकार है :

***वेद :*** वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य और विशालतम ज्ञान-भंडार है। इसमें धर्म से लेकर आचार तक, कला से लेकर व्यापार तक और नीति और व्यवहार से लेकर अध्यात्म तक के समस्त विषय वर्णित हैं। इसीलिए वेद ज्ञान है, वेद विचार है, वेद अस्तित्व है और वेद उपलब्धि है – ऐसा निर्वचनकारों का मत है। महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास ने इसे चार भागों में संकलित किया – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद में पद्यात्मक आर्षवाणी का संकलन है। इसमें कुल दस मंडल, 1028 सूक्त तथा 10580 ऋचाएँ हैं। यजुर्वेद गद्यप्रधान है। यह यज्ञकर्म के लिए प्रसिद्ध है। इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं– शुक्ल-यजुर्वेद और कृष्ण-यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद में 85 शाखाएँ हैं जिसमें वाजसनेयी शाखा के अंतर्गत काण्व शाखा प्राप्त है। शुक्ल यजुर्वेद में अध्याय एवं कंडिकाओं के रूप में मंत्र संगृहीत हैं। यजुर्वेद की तैत्तिरीयशाखा मण्डल, वल्ली और कंडिकाओं में विभक्त है।

***नीति :*** संस्कृत भाषा में नीतिविषयक साहित्य का विशाल भंडार है। प्रस्तुत पाठ **नीतिसुधा** में चाणक्यनीति तथा हितोपदेश से कुछ पद्य संकलित हैं। चाणक्य को चाणक्यनीति का निर्माता माना जाता है। अर्थशास्त्र के लेखक विष्णुगुप्त कौटल्य चाणक्यनीति के भी निर्माता हैं। ये कुटल गोत्र में उत्पन्न हुए थे इसलिए इन्हें कौटल्य कहते हैं। कुटिल नीतियों के निर्माता होने के कारण इन्हें कौटिल्य भी कहते हैं।

***हितोपदेश :*** हितोपदेश के प्रणेता नारायण हैं और सुदर्शन नामक राजा के मूर्ख पुत्रों को पढ़ाने वाले पंडित विष्णुशर्मा इसमें एक पात्र हैं। इस ग्रंथ में पशु-पक्षी और मनुष्यों की कथाओं के द्वारा उपदेश किया गया है। सरल उदाहरण देकर बालकों की शिक्षा के लिए इस ग्रंथ का निर्माण हुआ है। इस ग्रंथ से भी कुछ पद्य उक्त पाठ में संकलित हैं जो अत्यंत शिक्षाप्रद हैं।

***रामायण :*** रामायण, आदिकवि वाल्मीकि की रचना है इसीलिए आदिकाव्य है। इसका रचनाकाल सामान्यतः बुद्ध से पूर्व माना जाता है। रामायण में कुल सात कांड हैं– बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुन्दरकांड, युद्धकांड एवं उत्तरकांड। प्रस्तुत पाठ्यांश, अयोध्याकांड के सौवें सर्ग से संगृहीत है।

***महाभारत :*** इसकी रचना महर्षि व्यास ने की है। महाभारत का रचनाकाल भी सामान्यतः बुद्ध से पूर्व माना जाता है। कतिपय विद्वान् इसको रामायण का समकालीन कहते हैं। महाभारत में कुल अठारह पर्व हैं— आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शांतिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानिकपर्व एवं स्वर्गारोहणपर्व।

इस ग्रंथ में कौरव-पांडवों की उत्पत्ति से लेकर पाण्डवों के स्वर्ग जाने तक का वर्णन है। महाभारत में एक लाख श्लोक हैं इसलिए इसे **शतसाहस्रीसंहिता** भी कहते हैं। संपूर्ण संहिता व्यास द्वारा रचित है जिसके कारण यह **वैयासिकसंहिता** के नाम से भी प्रसिद्ध है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का पाठ्यांश अनुशासनपर्व के छठे अध्याय से लिया गया है।इसमें युधिष्ठिर एवं भीष्मपितामह का परस्पर संलाप है जहाँ कर्म तथा भाग्य दोनों में कौन श्रेष्ठ है? इस पर विवेचन किया गया है।

***नाटककार भास*** : संस्कृत का नाट्य-साहित्य अत्यंत विपुल है और मुख्य नाटककारों में भास अन्यतम हैं। कालिदास और बाण ने भास को आदरपूर्वक स्मरण किया है। भास का समय सामान्यतः 300 ई०पू० माना जाता है। भास प्रणीत 13 नाट्य-कृतियाँ हैं— प्रतिमा, अभिषेक, बालचरित, पंचरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार, ऊरुभंग, स्वप्नवासवदत्त, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, अविमारक और चारुदत्त नाटक। प्रस्तुत पाठ्यांश भास के सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक **स्वप्नवासवदत्तम्** के प्रथम अंक से संगृहीत है जिसमें प्राचीन भारत के आश्रमवासी मुनियों के मनस्वी जीवन तथा आश्रमपरिवेश पर उत्तम प्रकाश पड़ता है। यह पाठ पर्यावरण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

***तर्कसंग्रह*** : संस्कृत साहित्य में तर्कविज्ञान का विपुल भंडार है। तर्कसंग्रह, तर्कविज्ञान का एक प्रारंभिक सरल प्रकरण ग्रंथ है। इसके रचयिता अन्नंभट्ट हैं। इनका समय 17वीं शताब्दी है। इस ग्रंथ से संगृहीत पाठ में पाँच महाभूतों का वैज्ञानिक परिचय दिया गया है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश पंचमहाभूत हैं। इनमें प्रथम चार में से प्रत्येक के पाँच भेद बताए गये हैं। पाँचवाँ महाभूत आकाश एक ही प्रकार का माना गया है।

पाठ के प्रारंभ में महाभूतों का लक्षण दिया गया है तदनन्तर उनके भेद कहे गये हैं। उसके बाद प्रत्येक के नित्य एवं अनित्य पक्ष को समझाया गया है।

इसके पश्चात् इन चार महाभूतों के शरीर , इन्द्रिय और विषय के भेद से तीन-तीन प्रकार बताये गये हैं। इन भेदों का विवेचन बड़ा ही वैज्ञानिक है क्योंकि इन चार महाभूतों के शरीर को उन-उन महाभूतों के मुख्य लोकों में दिखाया गया है। यथा– पृथ्वी का शरीर प्राणियों के शरीर में बताया गया है। इसी तरह जल के शरीर को वरुण लोक में बताया गया है। तेज का शरीर आदित्य लोक में है और वायु का शरीर वायुलोक में है। इन्द्रियभेद का वर्णन करते हुए कहा गया है कि पृथ्वी का इन्द्रियमूलक भेद प्राणियों की नासिका में है, जल का इन्द्रियमूलक भेद जिह्वा के अग्रभाग में, तेज का इन्द्रियमूलक भेद प्राणियों के नेत्र की कनीनिका में तथा वायु का इन्द्रियमूलक भेद प्राणियों के त्वक् (चर्म) में स्थित है।

इसी प्रकार पृथ्वी का विषयमूलक भेद मिट्टी पाषाण आदि, जल का नदी, समुद्र, सरोवर आदि, तेज का स्वर्ण आदि एवं वायु का विषयमूलक भेद वृक्ष आदि के रूप में उपस्थित है। इन विभाजनों में महाभूतों के शरीर को उनके मुख्य स्थान में दिखाया गया है। इन्द्रिय वाले अंश को इस तरह दिखाया गया है कि प्राणियों की इन्द्रियों पर इनका क्या प्रभाव पड़ता है। विषयरूप में इन्हें उन विषयों पर दिखाया गया है, जिन अचेतन तत्त्वों पर उनका प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार यह पाठ दर्शन के पाँच महाभूतों का तर्कपूर्ण वैज्ञानिक प्रतिपादन है।

### प्रस्तुत संकलन में संस्कृत का वैज्ञानिक साहित्य

'विज्ञान' शब्द वि उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु से ल्युट् प्रत्यय जुड़ने से निष्पन्न हुआ है जिसका तात्पर्य विशेष रूप से किसी भी ज्ञान की विधा को क्रमबद्ध जानना है। इस प्रकार विज्ञान की परंपरा में प्रत्यक्ष रूप से सांसारिक या लौकिक ज्ञान को अथवा सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान को विशेष रूप से परख कर उसकी आलोचना, विवेचना तथा उसे प्रयोग की कसौटी पर कसा जाता है। ऐसी भ्रांत अवधारणा जनमानस के मन एवं मस्तिष्क पर बैठी हुई है कि विज्ञान के आकर्षक चमत्कार पाश्चात्य सभ्यता और आधुनिक खोजों की ही देन हैं। वस्तुतः ऐसा नहीं हैं।

सुदूर प्राचीन वैदिक काल से ही यत्र-तत्र प्रयोगात्मक विज्ञान के बिंदु, वेदों, ब्राह्मण-ग्रंथों तथा उपनिषदों में मिलते हैं, लेकिन शास्त्रों के रूप में भी संस्कृत भाषा-परंपरा में रची गयी विज्ञान की परंपरा प्राचीन सिद्ध होती है, जिससे

न केवल भारतीय विद्वान् अपितु Colebrooke, G.Thibaut, Burgess आदि विद्वान् भी सहमत हैं। शास्त्र के रूप में — खगोलशास्त्र, गणितशास्त्र, रसायनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, वास्तुशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, मानवविज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि न केवल विज्ञान की एक-एक अध्ययन विधा रह गये थे अपितु शास्त्रों के रूप में सर्वप्रसिद्धि को प्राप्त कर चुके थे। वराहमिहिर, आर्यभट, भास्कराचार्य, चरक, माधव, सुश्रुत, कौटिल्य आदि विश्वविख्यात विज्ञान-विषयक विद्वान् थे।

इसी गौरवशाली परंपरा का विद्यार्थियों को कुछ परिचय मिल सके तथा उनमें विश्लेषणात्मक बुद्धि उत्पन्न हो, प्राचीन भारतीय पद्धतियों का सामंजस्य, वे आज के विज्ञान से स्थापित कर सकें, इसलिए इस पुस्तक में चार वैज्ञानिक तथा दो वाणिज्य-संबंधी पाठों का संकलन किया गया है। उनकी पृष्ठभूमि में जो मूल ग्रंथ रहा है, उसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

***सूर्यसिद्धांत :*** आज उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त में 14 अधिकार और सब मिलाकर अनुष्टुप् छंद के 500 श्लोक हैं। इनमें भगणादि के मान आरंभ में दिए गये हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि कृतयुग के अंत में सूर्य की आज्ञा से सूर्यांशभूत पुरुष ने मय नामक असुर को यह सिद्धांत बताया अर्थात् शक संवत् 1817 के आरंभ में इसे बने 21,64,996 वर्ष हो गए। इसमें समय की इकाइयों का सूक्ष्म वर्णन, ग्रहों के मध्य तथा स्पष्ट गतियों की आनयन विधि, सूर्य व चंद्रग्रहण के मान के प्रकार तथा भूगोलादि का सुंदर व स्पष्ट विवरण मिलता है।

भारतीय खगोलशास्त्र की परंपरा में इसे एक आर्षग्रंथ की संज्ञा दी जाती है। **ब्रह्माण्डविज्ञानम्** उक्त ग्रंथ से संगृहीत पाठ्यांश है। ब्रह्मांडविज्ञान का विमर्श, पुराण ज्योतिर्विज्ञान एवं खगोलशास्त्र के ग्रंथों में विस्तृत रूप से प्राप्य है। इस पाठ में जहाँ ब्रह्मांड के मूल स्रोत को अद्वितीय ब्रह्म माना गया है वहीं इसमें विभिन्न ग्रहों, तारामंडल, भूलोकादि तथा ग्रह कक्षा का वर्णन भी किया गया है।

***चरकसंहिता*** : आयुर्विज्ञान से संबद्ध संस्कृत भाषा में विशाल साहित्य उपलब्ध है। इन ग्रंथों में चरकसंहिता का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहा गया है कि महर्षि पतंजलि का नाम चरक भी था। इनके संबंध में निम्नलिखित श्लोक प्रसिद्ध है:

***योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।***
***योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि।।***

**ऋतुचर्या** इसी ग्रंथ से संकलित है। स्वस्थ जीवन एवं आवश्यकतानुकूल कार्य के लिए समय के अनुकूल आहार की दिनचर्या अगर बरती जाय तो व्यक्तिगत रोग एवं तज्जन्य पारिवारिक तथा सामाजिक परेशानियों से बचते हुए कार्य-संपादन किया जा सकता है।

***भास्कराचार्य*** : भास्कराचार्य भारतीय गणितशास्त्र तथा ज्योतिर्विज्ञान की परंपरा में अद्वितीय विद्वान् थे जिनकी कीर्ति न केवल भारत में अपितु विश्व में फैली हुई थी। इन्होंने अपना जन्म स्थान सह्याद्रि पर्वत के निकट **विज्जडविड** ग्राम बताया है परंतु यह पता नहीं कि इसका वर्तमान नाम क्या है ? इन्होंने अपना जन्मकाल तथा ग्रंथनिर्माणकाल स्पष्ट भाषा में लिखा है। इनका जन्म 1114 ई० में हुआ और 36 वर्ष की आयु में इन्होंने **सिद्धान्तशिरोमणि** जैसे बृहत्काय ग्रंथ की रचना की।

**सिद्धान्तशिरोमणि** ग्रंथ के दो भाग हैं – *1. गणिताध्याय तथा 2. गोलाध्याय।* **ग्रहगणित** में पाटीगणित, अंकगणित, महत्त्वमापन (क्षेत्रफल, घनफल आदि का ) बीजगणित, भिन्नपरिकर्माष्टक आदि अनेक गणितीय विधियाँ स्पष्ट की गयी हैं। गोलाध्याय भास्कराचार्य की बौद्धिक प्रगल्भता का मूर्तरूप है। इसमें गोल की प्रशंसा, भूकेन्द्रित होकर खगोल का विवेचन, ज्योत्पत्ति, त्रिप्रश्न में दिशा-देश-काल आदि का ग्रहण, ग्रहों के उदय एवं अस्त का विवेचन, ऋतुवर्णन, यन्त्रविज्ञान तथा खगोलीय प्रश्नों का समाधान किया गया है। भास्कराचार्य ने स्वरचित पद्यात्मक गणित सिद्धांतों को स्पष्ट करने के लिए **वासनाभाष्य** नामक व्याख्या स्वयं की है।

**गणितविधि लीलावती** नामक ग्रंथ से संगृहीत है। भास्कराचार्य की यह पुस्तक लीलावती बालकों के लिए रचा गया संस्कृत में गणितशास्त्र का महत्त्वपूर्ण अंश है। कहा जाता है कि भास्कराचार्य ने अपनी व्युत्पन्नमति पुत्री लीलावती को संबोधित करके यह ग्रंथ लिखा है। इसमें प्रश्नोत्तर के रूप में पाटीगणित या अंकगणित (Arithmatic) क्षेत्रमिति आदि के प्रश्न रोचक रूप में उठाये गये हैं। अंत में आये गणितपाठ क्रमचय नामक अध्याय की भाषा बहुत ही ललित है। इस पर संस्कृत व हिन्दी में अनेक टीकाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।

**प्राचीनयन्त्रविज्ञानम्** सिद्धान्तशिरोमणि के गोलाध्याय से संगृहीत है। इसमें प्राचीन यंत्रों को समय की इकाई के आकलन और वेध की दृष्टि से निर्मित किया गया है। वस्तुतः प्रत्यक्ष, जो आँख से आकाश में दिखाई पड़ता है और वेध, जो गणित के सिद्धांत पर गणना में आता है, उनमें प्राप्त अंतर को यंत्रों से परीक्षित किया जाता है। वेधशाला उन्हीं यंत्रों के संग्रह का स्थान है। यहाँ खगोलीय स्थितियों का वेध किया जाता है।

***आचार्य कौटिल्य*** : आचार्य कौटिल्य एक पारंगत राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, और नीतिसम्राट् तथा मौर्यसाम्राज्य के विपुलयश-विस्तार के महानायक थे। अपनी अद्वितीय तथा अद्‌भुत कृतियों के कारण इन्हें संस्कृत साहित्य जगत् में अपने विषय का एकमात्र विद्वान् होने का गौरव प्राप्त है। सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य ने विष्णुगुप्त नामक एक अद्‌भुत, कुटिलमति राजनीतिज्ञ ब्राह्मण की सहायता से मगध के नन्दवंश को विनष्ट कर तथा शक्तिशाली यवनराज सिकन्दर के प्रयत्नों को विफल कर लगभग 321ई० पूर्व में विराट् साम्राज्य की स्थापना की, जिसको मौर्य साम्राज्य कहते हैं। इनका एक लोकविश्रुत नाम चाणक्य है। चाणक्य उन्हें चणक का पुत्र होने के कारण और कौटिल्य उन्हें कुटिल राजनीतिज्ञ होने के कारण कहा जाता था। ये दोनों ही नाम इनके पितृप्रदत्त न होकर वंशनाम एवं उपाधिनाम हैं। इनका पितृप्रदत्त नाम विष्णुगुप्त था।

इन्होंने अर्थशास्त्र की रचना की जो अपने आप में एक विशेष एवं अनूठा ग्रंथ है। डा० शाम शास्त्री ने इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा म०म०गणपति शास्त्री ने इसका संस्कृत अनुवाद कर इसे प्रामाणिक ग्रंथ बनाया है। इसमें पंद्रह अधिकरण हैं जिनका आरंभ विनयाधिकार से होकर प्रायः अर्थशास्त्र संबंधी सभी विषयों का पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करता है। यथा — अध्यक्षप्रचार, दायविभाग, कण्टकशोधन, दण्डव्यवस्था, मण्डल-विवेचन, षाड्गुण्य का उद्देश्य, क्षय, स्थान एवं वृद्धि, अभियास्यत्कर्म, संग्राम एवं छावनियों की व्यवस्था, भेदकप्रयोग, दूतकर्म, दुर्गलम्भोपाय, शत्रुवध के प्रयोग। अंत में अर्थशास्त्र की युक्तियाँ दी गयी हैं।

भारतीय साहित्य परम्परा में यह अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, तथा वाणिज्य के मिश्रण का अद्‌भुत ग्रंथ है।

**शुल्क-व्यवहारः तथा व्यावसायिक-पत्र-व्यवहारः** इसी ग्रंथ से संकलित अंश हैं। राष्ट्र की समृद्धि के लिए राजस्व की प्राप्ति आवश्यक है। इससे राजकीय एवं सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना एवं व्यवस्था होती है जिससे राष्ट्र में विभिन्न विकास के कार्य संपादित किये जाते हैं। राजस्व पर ही उत्पादन व्यवस्था और उत्पादनादि तथा उससे प्राप्त विभिन्न शुल्कों से राजव्यवस्था संपन्न होती है। प्रस्तुत पाठ प्राचीनकाल में देयशुल्कों की प्रक्रिया और व्यवस्था की ओर संकेत देता है।

**व्यावसायिक-पत्र-व्यवहारः** में राजप्रशासन या राजप्रमुख किस प्रकार की आज्ञा या अधिसूचना प्रकाशित करता था, इसका दिग्दर्शन इस पाठ में किया गया है। वाणिज्यिक प्रबंधन में पत्र का प्राचीन रूप क्या था – इस दृष्टि से यह पाठ महत्त्वपूर्ण है।

पुस्तक के आरंभ में दी गई भूमिका से तत्त्वमूलक, मंत्रणामूलक, पर्यावरणमूलक, विज्ञान एवं गणितमूलक तथा वाणिज्यमूलक ग्रंथों का संक्षिप्त ज्ञान कराया गया है, साथ ही संस्कृत के वैज्ञानिक साहित्य का भी एक संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

पाठों के प्रारंभ में पाठ परिचय दिए गये हैं जिससे संकलित अंश का प्रसंग सरलतया छात्रों के लिए बोधगम्य हो सके। कक्षा में छात्रों का ज्ञान बढ़े, इसके लिए पाठों के अंत में शब्दार्थ एवं टिप्पणी तथा व्यापक अभ्यास-प्रश्न दिये गये हैं। इनमें अर्थबोध, विषय-वस्तु-विस्तार और व्याकरण आदि से संबद्ध प्रश्नों का समावेश किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक की पाण्डुलिपि की समीक्षा के लिए आयोजित कार्यगोष्ठियों में आकर जिन विषय-विशेषज्ञों एवं संस्कृत अध्यापकों का मार्गदर्शन एवं सहयोग सुलभ हुआ है, संपादक उन सभी विद्वानों के प्रति हृदय से आभारी है। यद्यपि इस संकलन को यथासंभव छात्रोपयोगी एवं स्तर के अनुरूप बनाने का प्रयत्न किया गया है, तथापि इसे छात्रों के लिए और अधिक उपादेय बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

# विषयानुक्रमणिका

# गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

# वन्दना

**ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।**
**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।1।।**

**(यजुर्वेदः - 40/1) ईशोपनिषद्1**

***भावार्थ :*** सृष्टि में यह सब जो कुछ भी जड़ चेतन पदार्थ हैं वह ईश्वर से आवासित या आच्छादित हैं। अर्थात् सभी में ईश्वर का निवास है। अतः सभी लोग उस परमेश्वर के द्वारा दिए गए पदार्थों का ही परस्पर त्याग की भावना से भोग करें। किसी अन्य व्यक्ति के धन का लोभ न करें।।1।।

**समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।**
**समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।2।।**

**(ऋग्वेदः - 10/192/3)**

***भावार्थ :*** इस मंत्र में ईश्वर मानवमात्र के लिए प्रेरणा देते हैं कि सभी के विचार समान हों। समिति अर्थात् सभाएँ और उनमें बैठकर लिए गए निर्णय समान हों। सभी के मन अर्थात् संकल्प तथा चित्त अर्थात् चिंतन एक जैसे हों। मैं तुम सब को एक ही विचार से युक्त करता हूँ तथा सभी के लिए एक ही जैसे (समान भाव से) हवि अर्थात् अन्न आदि भोग्य पदार्थ प्रदान करता हूँ।

अभिप्राय यह है कि परमात्मा एवं प्रकृति की ओर से सभी को उपभोग के साधन समान भाव से दिए गए हैं। अतः विचारों की एकता, भोगों की समानता तथा समरसता में ही सुख है।।2।।

**द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः**
**शान्तिरोषधयः शान्तिःवनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म**
**शान्तिः सर्व ँ शान्तिःशान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।3।।**
**(यजुर्वेदः 36/17)**

***भावार्थ :*** द्युलोक शांतिदायक हो, अन्तरिक्षलोक तथा पृथ्वीलोक शांतिदायक हों, जल एवं ओषधियाँ तथा वनस्पतियाँ शांति देने वाली हों, सभी देवता अथवा सृष्टि की दिव्य शक्तियाँ शांति देने वाली हों, ब्रह्म अर्थात् महान् परमेश्वर या उसका दिया हुआ ज्ञान वेद, शांतिदायक हो, सम्पूर्ण चराचर जगत् शांतिप्रद हों, सब जगह शांति ही शांति हो, ऐसी शांति मुझे प्राप्त हो और वह सदा बढ़ती ही रहे।

अभिप्राय यह है कि सृष्टि के कण-कण में शान्ति हो। सभी पदार्थ सभी के लिए सुख-शांतिदायक हों। समस्त पर्यावरण ही हमारे लिए सुखद एवं शांतिप्रद हो। सुख-शांति की यह धारा कभी कम न हो, सदा बढ़ती ही रहे।। 3।।

## प्रथमः पाठः

# सूक्तिसुधा

प्रस्तुत पाठ चाणक्य द्वारा रचित चाणक्य-नीति तथा नारायण पण्डित प्रणीत हितोपदेश से संकलित किया गया है। महर्षि चाणक्य द्वारा कहे गए मुक्तक पद्य जीवन को मूल्यवान् बनाने के लिए परम उपयोगी हैं। पद्य संख्या एक से पाँच में– किस स्थान पर निवास करना चाहिए, कौन मनुष्य का सच्चा मित्र है, गुणों की उपयोगिता, जल की महत्ता तथा श्रेष्ठ विद्यार्थी के वर्णन हैं। पद्य संख्या छह से दस हितकारी उपदेशों को सूचित करती है यथा मूर्ख व्यक्ति का प्रवीण होना, मनस्वी व्यक्ति का व्यवहार, पुरुष के छह दोषों का वर्णन तथा सांसारिक जीवनसुखों के वर्णन। जीवन को मधुर तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए कतिपय मूल्यों की आवश्यकता होती है और ये नीतिपरक पद्य तथा हितकारी उपदेश जीवन को सुसंस्कृत एवं सार्थक बनाने में उपयोगी तथा सहायक सिद्ध होंगे।

**यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।**
**न च विद्यागमः कश्चिद् वासं तत्र न कारयेत्।।1।।**
**आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।**
**राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।2।।**
**कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।**
**को विदेशः सविद्यानां कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।।3।।**

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषप्रदम्।।4।।
सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।।5।।
काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम्।
तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्।।6।।
कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।
सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद् विशीर्येत वनेऽथवा।।7।।
धनानि जीवितार्थं च परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
सन्निमित्तं वरं त्यागो विनाशे नियते सति।।8।।
षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता।।9।।
अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।10।।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **विद्यागमः** | — | विद्यायाः आगमः, षष्ठी तत्पुरुष समास, विद्या की प्राप्ति। |
| **वृत्तिः** | — | वृत् + क्तिन् , आजीविका |
| **शत्रुसंकटे** | — | शत्रोः संकटः, तस्मिन्, पंचमी तत्पुरुष, शत्रु से संकट होने पर। |
| **व्यवसायिनाम्** | — | उद्यमशीलों के लिए। |
| **भेषजम्** | — | औषधि। |
| **भोजनान्ते** | — | भोजनस्य अन्ते, षष्ठी तत्पुरुष। |
| **सुखार्थी** | — | सुख चाहने वाला। |
| **धत्ते** | — | धारण करता है। |

| | | |
|---|---|---|
| **सत्सन्निधानेन** | — | सतां सन्निधानम्, तेन, षष्ठी तत्पुरुष, सज्जनों की संगति से। |
| **कुसुमस्तबकः** | — | कुसुमानां स्तबकः, षष्ठी तत्पुरुष, फूलों का गुच्छा। |
| **विशीर्येत** | — | नष्ट होवे। |
| **उत्सृजेत्** | — | त्याग दे। |
| **सन्निमित्तं** | — | श्रेष्ठ लक्ष्य के लिए। |
| **दीर्घसूत्रता** | — | कार्य के विषय में अधिक समय तक सोचते रहना, समय पर कार्य न करना। |
| **अर्थागमः** | — | अर्थस्य आगमः, षष्ठी तत्पुरुष, धन की प्राप्ति। |
| **अर्थकरी** | — | धन उत्पन्न करने वाली। |
| **प्रियवादिनी** | — | प्रिय बोलने वाली। |
| **अरोगिता** | — | किसी प्रकार के रोग का न होना (नीरोग होना )! |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतेन उत्तरं देयम्**
   - क) अयं पाठः काभ्यां ग्रंथाभ्यां संकलितः ?
   - ख) कुत्र वासः न कर्त्तव्यः ?
   - ग) वारि कदा भेषजं भवति ?
   - घ) विद्यार्थी किम् त्यजेत् ?
   - ङ.) प्राज्ञः परार्थे किम् किम् उत्सृजेत् ?
   - च) मूर्खः कथम् प्रवीणताम् याति ?
   - छ) पुरुषेण के षड्दोषाः हातव्याः ?

2 **रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्**
   - क) यः ............................ तिष्ठति सः बान्धवः।
   - ख) जीवलोकस्य ......................... षट् सुखानि भवन्ति।
   - ग) मनस्विनः ............................ इव द्वयी वृत्तिः भवति।

**3. अधोलिखितयोः पद्यांशयोः भावार्थम् लिखत**

क) कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।

ख) सन्निमित्तं वरं त्यागो विनाशे नियते सति।

**4. क भागस्थपदैः सह ख भागस्यार्थानां मेलनं क्रियताम्**

| क | ख |
| --- | --- |
| विद्यागमः | विदुषाम् |
| व्यसने | शोभाम् |
| सविद्यानाम् | विद्याप्राप्तिः |
| द्युतिम् | पुष्पगुच्छस्य |
| कुसुमस्तबकस्य | विपत्तौ |
| मूर्ध्नि | कल्याणम् |
| भूतिम् | शिरसि |

**5. उदाहरणानुसारं विग्रहपदानि आधृत्य समस्तपदानि रचयत**

यथा – विद्यायाः आगमः = विद्यागमः

| विग्रहपदानि | | समस्तपदानि |
| --- | --- | --- |
| राज्ञः द्वारे | = | ..................... |
| भोजनस्य अन्ते | = | ..................... |
| काञ्चनस्य संसर्गात् | = | ..................... |
| अर्थस्य आगमः | = | ..................... |

## द्वितीयः पाठः

# रामकृत-कुशलप्रश्नः

प्रस्तुत अंश वाल्मीकिरामायण के अयोध्याकांड के सौवें सर्ग से संकलित है। भगवान् श्रीराम चित्रकूट में वनवास कर रहे हैं। भ्रातृविरह से पीड़ित भरत श्रीराम से मिलने आए हैं। श्रीराम भरत से मिलने के बाद उनसे कुशल-प्रश्न करते हैं। इस प्रकरण में भरत राम से राज्यव्यवस्था संचालन संबंधी ऐसे अनेक प्रश्न करते हैं जिनसे राजनीतिविज्ञान पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

श्रीराम ने भरत से प्रश्न किया है कि क्या उन्होंने मंत्रियों की नियुक्ति शास्त्रोक्त अपेक्षाओं के अनुरूप की है? क्या मंत्रणा शास्त्रविधि से करते हैं? क्या उनका वेतन भुगतान समय से किया जाता है? यह पाठ्यांश राज्यव्यवस्था की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इन्हीं बिंदुओं पर प्रस्तुत पाठ्यांश में विशद विवेचन किया गया है।

**जटिलं चीरवसनं प्राञ्जलिं पतितं भुवि।**
**ददर्श रामो दुर्दर्शं युगान्ते भास्करं यथा।।1।।**
**कथञ्चिदभिविज्ञाय विवर्णवदनं कृशम्।**
**भ्रातरं भरतं रामः परिजग्राह पाणिना ।।2।।**
**आघ्राय रामस्तं मूर्ध्नि परिष्वज्य च राघवम्।**
**अङ्के भरतमारोप्य पर्यपृच्छत सादरम् ।।3।।**
**कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः।**
**कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः।।4।।**
**मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव।**

सुसंवृतो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः।।5।।
कच्चिन्निद्रावशं नैषि कच्चित्कालेऽवबुध्यसे।
कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम्।।6।।
कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह।
कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।।7।।
कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम्।
क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव।।8।।
कच्चित्सहस्रान्मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम्।
पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निःश्रेयसं महत्।।9।।
एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः।
राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम्।।10।।
कच्चिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः।
जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्ते तात योजिताः।।11।।
अमात्यानुपधातीतान्पितृपैतामहांछुचीन्।
श्रेष्ठांछ्रेष्ठेषु कच्चित्त्वं नियोजयसि कर्मसु।।12।।
कच्चिद्धृष्टश्च शूरश्च धृतिमान्मतिमांछुचिः।
कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः।।13।।
कच्चिद्बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्।
सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे।।14।।
कालातिक्रमणाच्चैव भक्तवेतनयोर्भृताः।
भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान्स्मृतः।।15।।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| जटिलम् | — | जटाधारी को। |
| ददर्श | — | देखा। |

| | | |
|---|---|---|
| **दुर्दर्शम्** | — | दुःखपूर्वक देखा जाने योग्य। |
| **विवर्णवदनम्** | — | खिन्न मुख वाला। |
| **परिजग्राह** | — | ग्रहण किया। |
| **परिष्वज्य** | — | आलिंगन करके। |
| **आघ्राय** | — | सूँघकर। |
| **मन्त्रः** | — | मंत्रणा। |
| **शास्त्रकोविदैः** | — | शास्त्रस्य कोविदैः, षष्ठी-तत्पुरुष, शास्त्र के ज्ञाताओं के द्वारा। |
| **अवबुध्यसे** | — | जागते हो। |
| **मन्त्रयसे** | — | मंत्रणा करते हो। |
| **दीर्घयसि** | — | विलम्ब करते हो। |
| **अर्थकृच्छ्रेषु** | — | अर्थस्य कृच्छ्रेषु, षष्ठी-तत्पुरुष, धन की कठिनाइयों में। |
| **निःश्रेयसम्** | — | कल्याण। |
| **अमात्यः** | — | मंत्री। |
| **विचक्षणः** | — | निपुण। |
| **जघन्यः** | — | निंदनीय। |
| **एषि** | — | प्राप्त होते हो। |
| **नियोजयसि** | — | नियुक्त करते हो। |
| **दक्षः** | — | चतुर, निपुण। |
| **भक्तवेतनयोः** | — | भोजन और वेतन से। |
| **उपधातीतान्** | — | राजाओं के द्वारा किये गये मंत्रियों के परीक्षण से शुद्ध होकर निकले हुए। |
| **धृष्टः** | — | किसी के दबाव में न आने वाला। |

**सन्धिविच्छेदः**

| | | |
|---|---|---|
| पर्यपृच्छत | = | परि + अपृच्छत (आर्षप्रयोग) |
| नैषि | = | न + एषि |
| नैकः | = | न + एकः |
| ह्यर्थकृच्छ्रेषु | = | हि + अर्थकृच्छ्रेषु |
| कुलीनाश्च | = | कुलीनाः + च |
| भृत्याश्च | = | भृत्याः + च |
| कालातिक्रमणाच्चैव | = | काल + अतिक्रमणात् + च +एव |
| भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति | = | भर्तुः + अपि + अतिकुप्यन्ति |
| सोऽनर्थः | = | सः + अनर्थः |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतेन उत्तरं देयम्**
   - क) अयम् पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः ?
   - ख) जटिलः चीरवसनः भुवि पतितः कः आसीत् ?
   - ग) रामःकम् पाणिना परिजग्राह ?
   - घ) भरतम् कः अपृच्छत् ?
   - ङ) राज्ञां विजयमूलं किम् भवति ?
   - च) राज्ञः कृते कीदृशः अमात्यः क्षेमकरः भवेत् ?
   - छ) सेनापतिः कीदृग् गुणयुक्तः भवेत् ?
   - ज) बलेभ्यः यथाकालम् किं दातव्यम् ?

2. **रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्**
   - क) रामः ददर्श दुर्दर्शं युगान्ते.................... यथा।
   - ख) अङ्के ................. आरोप्य रामः सादरं पर्यपृच्छत।
   - ग) कच्चित् काले ................?

घ) पण्डितः हि अर्थकृच्छ्रेषु ................ कुर्यात्।

ङ) श्रेष्ठाच्छ्रेष्ठेषु कच्चित् एवं ............ नियोजयसि।

3. **सप्रसङ्गं व्याख्यायेताम्**

क) मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव।

ख) कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।

4. **प्रथमनवमश्लोकयोः स्वमातृभाषया अनुवादः क्रियताम्**

5. **अधोलिखितपदानां उचितमर्थं कोष्ठकाद् चित्वा लिखत**

क) दुर्दर्शम् =

ख) परिष्वज्य =

ग) आघ्राय =

घ) मूर्ध्नि =

ङ) निःश्रेयसम् =

च) विचक्षणः =

छ) बलस्य =

(आलिंगन करके), (सूँघकर), (कठिनाई से देखने योग्य), (निपुण), (सेना का), (शिर में), (कल्याण को)

6. **विपरीतार्थमेलनं क्रियताम्**

| | |
|---|---|
| एकः | शनैः |
| क्षिप्रम् | मूर्खः |
| पण्डितः | लघु |
| महत् | बहु |

7. **सन्धिविच्छेदः क्रियताम्**

यथा – कुलीनश्च = कुलीनः + च

भृत्याश्च =

धृष्टश्च =

अनुरक्तश्च =

शूरश्च =

## तृतीयः पाठः

# दैवपुरुषकारबलाबलम्

प्रस्तुत पाठ महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत नामक महाकाव्य के अनुशासनपर्व से लिया गया है। इस पर्व के छठे अध्याय में युधिष्ठिर पितामह भीष्म से यह प्रश्न पूछते हैं कि भाग्य और कर्म में से कौन श्रेष्ठ है। उनके वक्तव्य का सार यह है कि कर्म के बिना भाग्य भी फलित नहीं होता। शुभ कर्म से सुख तथा पापकर्म से दुख की प्राप्ति होती है। कर्म से ही मनुष्य देवत्व को प्राप्त करता है। इस पाठ में युधिष्ठिर तथा भीष्म के इसी संवाद को प्रस्तुत किया गया है।

*युधिष्ठिर उवाच —*

**पितामह महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद।**

**दैवे पुरुषकारे च किंस्विच्छ्रेष्ठतरं भवेत्।।1।।**

*भीष्म उवाच —*

**अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्।**

**वसिष्ठस्य च संवादं ब्रह्मणश्च युधिष्ठिर।।2।।**

**दैवमानुषयोः किंस्वित्कर्मणोः श्रेष्ठमित्युत।**

**पुरा वसिष्ठो भगवान्पितामहमपृच्छत।।3।।**

**ततः पद्मोद्भवो राजन्देवदेवः पितामहः।**

**उवाच मधुरं वाक्यमर्थवद्धेतुभूषितम्।।4।।**

**नाबीजं जायते किञ्चिन्न बीजेन विना फलम्।**

बीजाद्बीजं प्रभवति बीजादेव फलं स्मृतम्।।5।।
यादृशं वपते बीजं क्षेत्रमासाद्य कर्षकः।
सुकृते दुष्कृते वापि तादृशं लभते फलम्।।6।।
शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा।
कृतं सर्वत्र लभते नाकृतं भुज्यते क्वचित्।।7।।
ज्योतींषि त्रिदशा नागा यक्षाश्चन्द्रार्कमारुताः।
सर्वे पुरुषकारेण मानुष्याद्देवतां गताः।।8।।
अर्थो वा मित्रवर्गो वा ऐश्वर्यं वा कुलान्वितम्।
श्रीश्चापि दुर्लभा भोक्तुं तथैवाकृतकर्मभिः।।9।।
नादातारं भजन्त्यर्था न क्लीबं नापि निष्क्रियम्।
नाकर्मशीलं नाशूरं तथा नैवातपस्विनम्।।10।।
एवं चेत्कर्मफलं न स्यात्सर्वमेवाफलं भवेत्।
लोको दैवं समालम्ब्य उदासीनो भवेन्नतु।।11।।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।
आत्मैव चात्मनः साक्षी कृतस्याप्यकृतस्य च।।12।।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **सर्वशास्त्रविशारदः** | – | सभी शास्त्रों में कुशल। |
| **उवाच** | – | बोले। |
| **प्रभवति** | – | पैदा होता है। |
| **वपते** | – | बोता है। |
| **क्षेत्रम्** | – | खेत। |
| **सुकृते** | – | अच्छे कर्म में। |
| **दुष्कृते** | – | बुरे कर्म में। |
| **सस्यम्** | – | अन्न। |

| | | |
|---|---|---|
| **समृध्यते** | – | वृद्धि को प्राप्त करता है। |
| **त्रिदशाः** | – | देवता। |
| **क्लीबम्** | – | नपुंसक। |
| **तप्यते** | – | तप करता है। |
| **खम्** | – | आकाश। |
| **दैवम्** | – | भाग्य। |
| **रिपुः** | – | शत्रु। |
| **साक्षी** | – | गवाह। |

**सन्धिविच्छेदः**

| | | |
|---|---|---|
| किंस्विच्छ्रेष्ठतरम् | = | किंस्वित् + श्रेष्ठतरम् |
| आत्राप्युदाहरन्तीममितिहासम् | = | अत्र + अपि + उदाहरन्ति + इमम् + इतिहासम् |
| पद्मोद्भवः | = | पद्म + उद्भवः |
| श्रीश्चापि | = | श्रीः + च + अपि |
| भवेन्न | = | भवेत् + न |
| ह्यात्मनः | = | हि + आत्मनः |
| बन्धुरात्मैव | = | बन्धुः + आत्मा + एव |
| कृतस्याप्यकृतस्य | = | कृतस्य + अपि + अकृतस्य |

## अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया देयानि**
   - क) पाठोऽयं कस्माद् ग्रन्थाद् उद्धृतः?
   - ख) महाभारतम् कः रचितवान्?

ग) युधिष्ठिरः पितामहं किम् अपृच्छत्?

घ) फलम् कस्माद् जायते?

ङ) जनः सर्वत्र किं लभते?

च) सर्वे केन मानुष्याद् देवतां गताः?

छ) लोकः कम् समालम्ब्य उदासीनो न भवेत्?

ज) कृतस्य अकृतस्य च कः साक्षी?

झ) अर्थाः कं कं न भजन्ति?

**2. समक्षकोष्ठकाद् उचितपदम् आदाय रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्**

क) .................. अर्थवद्धेतुभूषितम् मधुरं वाक्यम् उवाच।

(युधिष्ठिरः/पितामहः )

ख) .................... किंचित् न जायते। (बीजम्/ अबीजम्)

ग) यादृशं वपते बीजम् ................... लभते फलम्। (अयम् /तादृशं)

घ) सर्वे पुरुषकारेण ................. देवतां गताः। (मानुष्यात्/मृत्युलोकात्)

ङ) लोकः ............... समालम्ब्य उदासीनः न भवेत्। (धनम्/दैवम् )

**3. अधोलिखितानाम् आशयः स्पष्टीक्रियताम्**

क) नाबीजं जायते किञ्चिन्न बीजेन विना फलम्।

ख) कृतं सर्वत्र लभते नाकृतं भुज्यते क्वचित्।

ग) सर्वे पुरुषकारेण मानुष्याद्देवतां गताः।

**4. अधोलिखितौ पद्यांशौ व्याख्यायेताम्**

क) यादृशं वपते बीजं तादृशं लभते फलम्।

ख) आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।

**5. सन्धिविच्छेदः क्रियताम्**

| | | |
|---|---|---|
| यथा – नाबीजम् | = | न + अबीजम् |
| नाशूरम् | = | .................. |
| नातपस्विनम् | = | .................. |

| | | |
|---|---|---|
| वापि | = | .................. |
| नापि | = | .................. |
| नाकृतम् | = | .................. |
| कुलान्वितम् | = | .................. |

6. **अधोलिखितेषु पदेषु धातुं/ प्रत्ययं च पृथक्कृत्य लिखत**

| यथा – भूषितम् | भूष् | क्त |
|---|---|---|
| **पदम्** | **धातुः** | **प्रत्ययः** |
| स्मृतम् | ........... | ............. |
| कृतम् | ........... | ............. |
| गताः | ........... | ............. |
| उप्तम् | ........... | ............. |

7. **अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकं पदं समक्षं प्रदत्तकोष्ठकात् चित्वा लिखत**

(पुरुषकारे, अकृतम्, दुःखम्, रिपुः, देवताः, पापेन, दुष्कृते)

| यथा – | दैवे | पुरुषकारे |
|---|---|---|
| | **पदम्** | **विपरीतार्थकपदम्** |
| | सुकृते | ........... |
| | शुभेन | ........... |
| | सौख्यम् | ........... |
| | कृतम् | ........... |
| | दैत्याः | ........... |
| | बन्धुः | ........... |

## चतुर्थः पाठः

# आश्रमजीवनम्

यह पाठ महाकवि भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रथमांक से संकलित है। राजकुमारी पद्मावती अपनी आश्रमवासिनी माता से मिलने के लिए आश्रम में जाती है। वहाँ राजकुमारी के अंगरक्षक उसके मार्ग से लोगों को हटा रहे हैं। वृद्ध कंचुकी उन्हें समझाते हुए कहता है कि आश्रम के निवासी नगर के परिभवों से मुक्त होने के लिए यहाँ आकर रहते हैं। सांसारिक वासनाओं से मुक्त होने के कारण वे सर्वथा समादरणीय हैं। वहीं यौगन्धरायण के साथ वासवदत्ता भी पहुँची हुई है जो पद्मावती के व्यक्तित्व से प्रभावित है। यही प्रसंग इस पाठ में वर्णित है।

**यौगन्धरायणः** : (कर्णं दत्वा), कथमिहाप्युत्सार्यते? कुतः -

*धीरस्याश्रमसंश्रितस्य वसतस्तुष्टस्य वन्यैः फलै-*
*र्मानार्हस्य जनस्य वल्कलवतस्त्रासः समुत्पाद्यते।*
*उत्सिक्तो विनयादपेतपुरुषो भाग्यैश्चलैर्विस्मितः*
*कोऽयं भो? निभृतं तपोवनमिदं ग्रामीकरोत्याज्ञया।।*

**वासवदत्ता** : आर्य ! क एष उत्सारयति?

**यौगन्धरायणः** : भवति ! यो धर्मादात्मानमुत्सारयति।

**वासवदत्ता** : आर्य ! न ह्येवं वक्तुकामा, अहमपि नामोत्सारयितव्या भवामीति।

**यौगन्धरायणः** : भवति ! एवमनिर्ज्ञातानि दैवतान्यवधूयन्ते।

**वासवदत्ता** : आर्य ! तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति, यथायं परिभवः।

| | | |
|---|---|---|
| यौगन्धरायणः | : | भुक्तोज्झित एष विषयोऽत्रभवत्या। नात्र चिन्ता कार्या। कुतः, |

*पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासी-*
*च्छ्लाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।*
*कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना*
*चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः।।*

| | | |
|---|---|---|
| भटौ | : | उत्सरतार्याः, उत्सरत। |
| | | (ततः प्रविशति काञ्चुकीयः) |
| काञ्चुकीयः | : | सम्भषक ! न खलु न खलूत्सारणा कार्या। |
| उभौ | : | आर्य ! तथा। |
| | | (निष्क्रान्तौ) |
| यौगन्धरायणः | : | हन्त ! सविज्ञानमस्य दर्शनम्। वत्से ! उपसर्पावस्तावदेनम्। |
| वासवदत्ता | : | आर्य ! तथा। |
| यौगन्धरायणः | : | (उपसृत्य) भोः ! किङ्कृतेयमुत्सारणा। |
| काञ्चुकीयः | : | भोस्तपस्विन् ! |
| यौगन्धरायणः | : | (आत्मगतम्) तपस्विन्निति गुणवान् खल्वयमालापः। अपरिचयात्तु न श्लिष्यते मे मनसि। |
| काञ्चुकीयः | : | भोः ! श्रूयताम्। एषा खलु गुरुभिरभिहितनामधेयस्य अस्माकं महाराजदर्शकस्य भगिनी पद्मावती नाम। सैषा नो महाराजमातरं महादेवीमाश्रमस्थामभिगम्यानुज्ञाता तत्रभवत्या राजगृहमेव यास्यति। तदद्यास्मिन् आश्रमपदे वासोऽभिप्रेतोऽस्याः। |
| यौगन्धरायणः | : | (स्वगतम्)एवम् ! एषा सा मगधराजपुत्री पद्मावती नाम, या पुष्पकभद्रादिभिरादेशिकैरादिष्टा स्वामिनो देवी भविष्यतीति। ततः- |

*प्रद्वेषो बहुमानो वा संङ्कल्पादुपजायते।*
*भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां मे महती स्वता।।*

वासवदत्ता : (स्वगतम्) राजदारिकेति श्रुत्वा भगिनिकास्नेहोऽपि मेऽत्र संपद्यते।

(ततः प्रविशति पद्मावती सपरिवारा चेटी च )

चेटी : एत्वेतु, भर्तृदारिका, इदमाश्रमपदम्, प्रविशतु।

(ततः प्रविशत्युपविष्टा तापसी)

तापसी : स्वागतं राजदारिकायाः

वासवदत्ता : (स्वगतम्) इयं सा राजदारिका। अभिजनानुरूपं खल्वस्या रूपम्।

पद्मावती : आर्ये ! वन्दे।

तापसी : चिरञ्जीव। प्रविश जाते। प्रविश। तपोवनानि नामाऽतिथिजनस्य स्वगेहम्।

पद्मावती : आर्ये ! भवतु, भवतु। आर्ये ! विश्वस्तास्मि। अनेन बहुमानवचनेनानुगृहीतास्मि।

वासवदत्ता : (स्वगतम्) नहि रूपमेव, वागपि खल्वस्या मधुरा।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

**उत्सार्यते** — हटाया जा रहा है।
**वन्यैः फलैः** — वन में पैदा होने वाले फलों से।
**मानार्हस्य जनस्य** — सम्मान के योग्य व्यक्ति का।
**त्रासः** — भय।
**उत्सिक्तः** — अहंकार से प्रमत्त।
**निभृतम्** — शांत।
**ग्रामीकरोति** — ग्राम बना रहा है।
**अनिर्ज्ञातानि** — अनजाने।
**अवधूयन्ते** — तिरस्कृत होते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| **परिभवः** | – | तिरस्कार। |
| **प्रद्वेषः** | – | वैर। |
| **संवृत्ता** | – | हो गयी है। |
| **उपसर्पावः** | – | हम दोनों पास चलते हैं |

**सन्धिविच्छेदः**

| | | |
|---|---|---|
| ह्येवम् | = | हि + एवम् |
| नामोत्सारयितव्या | = | नाम + उत्सारयितव्या |
| भुक्तोज्झितः | = | भुक्त + उज्झितः |
| खल्वस्याः | = | खलु + अस्याः |
| सैषा | = | सा + एषा |
| तदद्य | = | तत् + अद्य |
| आसीच्छ्लाघ्यम् | = | आसीत् + श्लाघ्यम् |
| एत्वेतु | = | एतु + एतु |

## अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया देयानि**
   - क) अयं पाठः कस्मात् पुस्तकात् संगृहीतः कश्च तस्य प्रणेता?
   - ख) "निभृतं तपोवनमिदं ग्रामीकरोत्याज्ञया" इति कः कथयति?
   - ग) "तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति यथाह्ययं परिभवः" इति कस्याः वचनम्?
   - घ) भाग्यपङ्क्तिः किमिव गच्छति?
   - ङ) वासवदत्ता का अस्ति?
   - च) पद्मावती का अस्ति?
   - छ) पद्मावती केषु धर्मपीडाम् न इच्छति?
   - ज) वासवदत्ता पद्मावतीं दृष्ट्वा किं कथयति?

2. **रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्**

क) अनिर्ज्ञातानि .................. अवधूयन्ते।

ख) .................... अस्य दर्शनम्।

ग) एषा सा ..................... पद्मावती नाम।

घ) नहि रूपमेव .................... अस्याः मधुरा।

3. **सप्रसङ्गं व्याख्यायन्ताम्**

क) चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः।

ख) प्रद्वेषो बहुमानो वा सङ्कल्पादुपजायते।

ग) तपोवनानि नाम अतिथिजनस्य गेहम्।

4. **धीरस्याश्रमसंश्रितस्य, पूर्वं त्वयाप्यभिमतं इति श्लोकद्वयस्य स्वमातृभाषया अनुवादः कार्यः**

5. **सन्धिविच्छेदः क्रियताम्**

त्वयाप्यभिमतम् =

चोत्पादयन्ति =

वागपि =

तदपि =

6. **अधोलिखितपदानाम् समानार्थकं पदं कोष्ठकात् चिनुत**

क) परिभवः – (विभवः/ तिरस्कारः)

ख) निभृतम् – (शान्तम् / विभृतम् )

ग) उत्सारणा – (उत्प्रेरणा/ अपसारणा)

घ) आलापः – (विलापः / संलापः)

ङ) कुसुमानि – (सुमनानि / कुत्सितानि)

## पञ्चमः पाठः

# पञ्चमहाभूतानि

प्रस्तुत अंश तर्कसंग्रह से संकलित हैं। तर्कसंग्रह के प्रणेता श्री अन्नंभट्ट हैं। संकलित अंश में पाँच महाभूतों का परिचय दिया गया है। पाँचमहाभूत हैं - पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश। इन पाँचों महाभूतों का वैज्ञानिक विश्लेषण उद्धृत अंश में किया गया है।

इनमें प्रथमतः चार महाभूतों पृथ्वी, जल, तेज एवं वायु के लक्षण बताने के बाद प्रत्येक के पाँच भेद बताए गए हैं। आकाश का लक्षण बताकर उसको एक ही प्रकार का माना है।

ये चार महाभूत शरीर, इन्द्रिय और विषय में कहाँ कहाँ रहते हैं, इसका तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत पाठ्यांश में किया गया है।

ये महाभूत शरीर रूप से अपने मूल स्थान में रहते हैं और इन्द्रिय रूप से प्राणियों की उन-उन इन्द्रियों में रहते हैं तथा विषय रूप से संबद्ध पदार्थों में रहते हैं।

**पृथिवी, अप्, तेजः, वायुः, आकाशश्चेति पञ्चमहाभूतानि। तत्र गन्धवती पृथिवी। सा द्विविधा - नित्याऽनित्या च। नित्या परमाणुरूपा। अनित्या कार्यरूपा। पुनस्त्रिविधा। शरीरेन्द्रियविषयभेदात्। शरीरमस्मदादीनाम्। इन्द्रियं गन्धग्राहकं घ्राणं नासाग्रवर्ति। विषयो मृत्पाषाणादिः।**

**शीतस्पर्शवत्य आपः। ताः द्विविधाः। नित्याऽनित्याश्च। नित्याः परमाणुरूपाः। अनित्याः कार्यरूपाः। पुनस्त्रिविधाः - शरीरेन्द्रियविषयभेदात्।**

शरीरं वरुणलोके। इन्द्रियं रसग्राहकं रसनं जिह्वाग्रवर्ति। विषयः सरित्समुद्रादिः।

उष्णस्पर्शवत्तेजः। तच्च द्विविधम्। नित्यमनित्यं च। नित्यं परमाणुरूपम्। अनित्यं कार्यरूपम्। पुनस्त्रिविधम्। शरीरेन्द्रियविषयभेदात्। शरीरमादित्यलोके प्रसिद्धम्। इन्द्रियं रूपग्राहकं चक्षुः कृष्णताराग्रवर्त्ति। विषयश्चतुर्विधो भौमदिव्योदर्याकरजभेदात्। भौमं वह्न्यादिकम्। अबिन्धनं दिव्यं विद्युदादि। भुक्तस्य परिणामहेतुरुदर्यम्। आकरजं सुवर्णादि।

रूपरहितः स्पर्शवान् वायुः। स द्विविधः - नित्योऽनित्यश्च। नित्यः परमाणुरूपः। अनित्यः कार्यरूपः। पुनस्त्रिविधः। शरीरेन्द्रियविषयभेदात्। शरीरं वायुलोके। इन्द्रियं स्पर्शग्राहकं त्वक् सर्वशरीरवर्ति। विषयो वृक्षादिकम्पनहेतुः। शरीरान्तःसंचारी वायुः प्राणः। स चैकोऽप्युपाधिभेदात् प्राणापानादिसंज्ञां लभते।

शब्दगुणकमाकाशम्। तच्चैकं विभु नित्यं च।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| अप् | — | जल। |
| गन्धवती | — | गन्ध से युक्त, गन्ध + मतुप्, स्त्री। |
| द्विविधा | — | दो प्रकार की। |
| नित्या | — | त्रैकालिकसत्तायुक्ता, तीनों कालों में जो रहे। |
| अनित्या | — | न नित्या इति, जो किसी एक काल में न रहे। |
| अस्मदादीनाम् | — | हम जैसों का। |
| मृत्पाषाणादि | — | मृदश्च पाषाणाश्च इति, मिट्टी और पत्थर। |
| शीतस्पर्शवत्यः | — | शीतस्पर्शः वर्तते यासाम्, शीतल स्पर्श से युक्त। |

| | | |
|---|---|---|
| **सरित्समुद्रादिः** | — | सरितश्च समुद्रश्चेति, नदियाँ व समुद्र आदि। |
| **आदित्यलोके** | — | सूर्यलोके, सूर्य लोक में। |
| **भौमदिव्योदर्याकरजभेदात्** | — | भौम - भूमि संबंधी अग्नि। दिव्य - देवसंबंधी या अलौकिक यथा आकाश में चमकने वाली तड़ित् (विद्युत्) उदर्य- उदर संबंधी अग्नि (तेज) जो खाए भोजन को पचाती है। आकरज - जो तेज खनन से निकाला गया हो यथा स्वर्ण संबंधी। |
| **उपाधिभेदात्** | — | उपाधि के भेद से। |
| **प्राणापानादि** | — | पाँच प्रकार की वायु जो शरीर में रहती है - प्राण, अपान, व्यान, समान व उदान। |
| **विभु** | — | सर्वव्यापक। |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतभाषया उत्तराणि प्रदेयानि**
   - क) पञ्चमहाभूतानि कानि?
   - ख) तत्र किंलक्षणा पृथिवी?
   - ग) अपां किं लक्षणम्?
   - घ) तेजसः किं स्वरूपम्?
   - ङ) रूपरहितः स्पर्शवान् इति कस्य लक्षणम्?
   - च) शब्दगुणकं किं भवति?
2. **रिक्तस्थानपूर्तिः करणीया**
   - क) इन्द्रियं गन्धग्राहकं ................ नासाग्रवर्ति।
   - ख) इन्द्रियं रसग्राहकं ................ जिह्वाग्रवर्ति।
   - ग) ................ चक्षुः कृष्णताराग्रवर्ति।
   - घ) शरीरान्तःसंचारी ............. प्राणः।

**3. अधोलिखितानां व्याख्या कार्या**

क) तत्र गन्धवती पृथिवी।

ख) विषयश्चतुर्विधो भौमदिव्योदर्याकरजभेदात्।

ग) इन्द्रियं स्पर्शग्राहकं त्वक् सर्वशरीरवर्ति।

घ) शब्दगुणकमाकाशम्।

**4. पञ्चमहाभूतानां स्वरूपं स्वभाषया स्पष्टीकुरुत**

**5. अधोलिखितानि वाक्यानि केन सम्बद्धानि इति यथानिर्दिष्टं लिखत**

शरीरं वरुणलोके

शरीरमस्मदादीनाम्

शरीरं वायुलोके

शरीमादित्यलोके

विषयो मृत्पाषाणादिः

विषयः सरित्समुद्रादिः

विषयो वृक्षादिकम्पनहेतुः

अबिन्धनं दिव्यं विद्युदादि।

पृथिवी

वायुः

तेजः

आपः

**6. अधोलिखितपदानामर्थमेलनं क्रियताम्**

घ्राणम्, आपः, मृत्, सरित्, चक्षुः, वह्निः आकरजम्, त्वक्, विभुः

| **अर्थाः** | **पदानि** | **अर्थाः** | **पदानि** |
|---|---|---|---|
| जल | | स्पर्शेन्द्रिय | |
| नासिका | | आग | |
| नदी | | व्यापक | |
| नेत्र | | खानों से उत्पन्न | |
| | | मिट्टी | |

षष्ठः पाठः

# ब्रह्माण्डवर्णनम्

प्रस्तुत पाठ सूर्यसिद्धान्त के भूगोलाध्याय से लिया गया है। मयासुर (पौराणिक आख्यानानुसार यह लंका के अधिपति रावण का श्वसुर था) के पूछने पर सूर्यांश पुरुष ने सृष्टि की रहस्य-विद्या का प्रवचन किया जो कि ब्रह्माण्ड की संरचना (Structure of Universe) को स्पष्ट करती है। यह पाठ इसका भी परिचायक है कि सृष्टि के आदिकाल से ही मनुष्य रहस्यों के अन्वेषण के प्रति जिज्ञासु व जागरूक रहा है। मनुष्य की वैज्ञानिकी प्रवृत्ति निरंतर अपने आदि स्रोत को जानने के लिए उत्सुक तथा क्रमिक विकास के निर्धारण के प्रति प्रयत्नशील रही है। प्रस्तुत किए गए इस अंश में ब्रह्मा के मनस् से चंद्रमा की उत्पत्ति, तदनंतर पाँच तारा ग्रह - मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र एवं शनि की स्थिति, ग्रह, नक्षत्र तथा तारों का क्रम, गोल के रूप उनकी आकृति, परिधि, व्योम, कक्षा व भ्रमण आदि का वर्णन है।

*मयासुर आह-*

**भगवन् ! किम्प्रमाणा भूः किमाकारा किमाश्रया।**
**किंविभागा कथं चात्र सप्त पातालभूमयः।।1।।**
**अहोरात्रव्यवस्थां च विदधाति कथं रविः।**
**कथं पर्येति वसुधां भुवनानि विभावयन्।।2।।**
**भूमेरुपर्युपर्यूर्ध्वाः किमुत्सेधाः किमन्तराः।**

ग्रहर्क्षकक्षाःकिम्मात्राः स्थिताः केन क्रमेण ताः।।3।।

*सूर्यांशपुरुषो मयासुरमाह –*

प्रकृत्यन्तर्गतो देवो बहिरन्तश्च सर्वगः।

सङ्कर्षणोऽपः सृष्ट्वादौ तासु वीर्यमवासृजत्।।4।।

तदण्डमभवद् हैमं सर्वत्र तमसावृतम्।

तत्रानिरुद्धः प्रथमं व्यक्तिभूतः सनातनः।।5।।

हिरण्यगर्भो भगवानेष च्छन्दसि पठ्यते।

आदित्यो ह्यादिभूतत्वात् प्रसूत्या सूर्य उच्यते।।6।।

रथे विश्वमये चक्रं कृत्वा संवत्सरात्मकम्।

छन्दांस्यश्वास्तत्र युक्त्वा पर्यटत्येष सर्वदा।।7।।

अथ सृष्ट्यां मनश्चक्रे ब्रह्माहङ्कारमूर्तिभृत्।

मनसश्चन्द्रमा जज्ञे सूर्योऽक्ष्णोस्तेजसां निधिः।।8।।

मनसः खं ततो वायुरग्निरापो धरा क्रमात्।

गुणैकवृद्ध्या पञ्चेति महाभूतानि जज्ञिरे।।9।।

अग्नीषोमौ भानुचन्द्रौ ततस्त्वङ्गारकादयः।

तेजोभूखाम्बुवातेभ्यः क्रमशः पञ्च जज्ञिरे।।10।।

ग्रहनक्षत्रताराणां भूमेर्विश्वस्य वा विभुः।

देवासुरमनुष्याणां सिद्धानां च यथाक्रमम्।।11।।

ब्रह्माण्डमेतत् सुषिरं तत्रेदं भूर्भुवादिकम्।

कटाहद्वितयस्येव सम्पुटं गोलकाकृतिः।।12।।

ब्रह्माण्डमध्ये परिधिर्व्योमकक्षाऽभिधीयते।

तन्मध्ये भ्रमणं भानामधोऽधः क्रमशस्तथा।।13।।

मन्दामरेज्य-भूपुत्र-सूर्य-शुक्रेन्दुजेन्दवः।

परिभ्रमन्त्यधोऽधस्थाः सिद्धा विद्याधरा घनाः।।14।।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

**ब्रह्माण्डम्** — जड़ चेतनमय समस्त जगत्, जो ब्रह्म द्वारा स्थापित हिरण्यगर्भ से आविर्भूत हुआ है।

**भूः** — पृथिवी।

**किम्प्रमाणा** — किं प्रमाणं हेतुर्यस्याः सा। पृथ्वी की सत्ता का क्या कारण है?

**किमाश्रया** — क आश्रय आधारो यस्याः सा। यह भू किस आधार पर टिकी हुई है।

**पातालभूमयः** — पातालविभागरूपाः पुराणादिषूक्ताः सप्तलोकाः, पुराणों में कहे गए पाताल के सात विभाग- अतल, वितल, सुतल,रसातल, तलातल, महातल एवं पाताल।

**अहोरात्रव्यवस्थाम्** — अह्नः (दिनस्य) रात्रेश्च व्यवस्थाम्, दिन व रात की व्यवस्था अथवा क्रम को।

**रविः** — भ्रमणशीलो बिम्बरूपो भगवान् सूर्यः, भ्रमण करने वाले भगवान् सूर्य का बिम्बरूप जो दिन व रात का कारण है।

**विदधाति** — करोति, करता है।

**पर्येति** — परिभ्रमति, घूमता है।

**भुवनानि** — पृथ्वी लोक से ऊपर के सात लोक – भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य, इनकी संज्ञा भुवन है।

**विभावयन्** — स्वकरप्रकाशेन प्रकाशयन् – अपनी किरणों के प्रकाश द्वारा प्रकाश करता हुआ।

| | | |
|---|---|---|
| **किमुत्सेधाः** | — | कियानुत्सेध उच्चता यासां ताः, भूमेः सकाशात् प्रत्येकं कियदन्तरेण सन्तीति, कितनी ऊँचाई पर (भूमि से लेकर ये लोक कितनी - कितनी दूरी पर हैं। ) |
| **ग्रहर्क्षकक्षाः** | — | ग्रहः, ऋक्षः (नक्षत्रम्) ग्रह + ऋक्षम् , ग्रहर्क्षाणां कक्षा, ग्रह व नक्षत्रों की कक्षाओं का क्रम, किस ग्रह की कक्षा के ऊपर किस दूसरे ग्रह की कक्षा है। |
| **प्रकृत्यन्तर्गतः** | — | प्रकृतिर्हि ब्राह्मी माया तदन्तर्गतः मायोपहितः सन्, प्रकृति ब्रह्म की माया है, उसके अन्तर्गत अथवा माया से युक्त हुआ। |
| **सङ्कर्षणः** | — | सङ्कर्षणो नाम वासुदेवांशः, वासुदेव के अंश का नाम। |
| **अपः** | — | जलानि, जल। |
| **सृष्ट्वा** | — | निर्माय, निर्माण करके। |
| **वीर्यम्** | — | शक्तिविशेषम्, विशेष शक्ति को। |
| **अवासृजत्** | — | निक्षिप्तवानिति, डाल दिया। |
| **तदण्डम्** | — | सङ्कर्षणोत्क्षिप्तवीर्यं जलसंयोगेन गोलकाकृतिपिण्डम्, संकर्षण से खींच कर डाले गए वीर्य व जल के संयोग से गोल की आकृति में उत्पन्न हुआ पिण्ड। |
| **हैमम्** | — | सौवर्णम्, सोने जैसे वर्ण वाला। |
| **सनातनः** | — | नित्यः , अनिरुद्धः नित्य बिना किसी अवरोध वाला। |

**व्यक्तिभूतः** — अभिव्यक्तः, स्वयं गोचरतामुपगत इति भावः, अभिव्यक्त हुआ।

**हिरण्यगर्भः** — षड्गुण, ऐश्वर्य, समग्रता, धर्म, यश, श्री, ज्ञान-वैराग्य से सम्पन्न अनिरुद्ध भगवान् जो हैम अण्ड से प्रादुर्भूत हुआ, वेद में हिरण्यगर्भ कहलाता है।

**छन्दसि** — वेदे, वेद में।

**आदिभूतत्वात्** — सर्वतः प्रथममभिव्यक्तात्वाद्, सर्वप्रथम अभिव्यक्त होने के कारण सूर्य को आदित्य कहा जाता है।

**प्रसूत्या** — जगदुत्पत्तितया, जगत् की उत्पत्ति के द्वारा।

**विश्वमये रथे** — ब्रह्माण्डात्मके रथे, ब्रह्माण्डस्वरूपी रथ पर।

**संवत्सरात्मकम्** — द्वादशमासात्मकं वर्षरूपं चक्रं कृत्वा, बारह महीनों वाले वर्ष रूपी चक्र को करके (इसीलिए एक वर्ष में रवि बारह राशियों का भोग करता है)।

**छन्दांस्यश्वान्** — छन्दांसि गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगती-रूपाणि सप्ताश्वान्, गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती - छंद रूपी सात अश्वों को।

**युक्त्वा** — संयोज्य, जोड़कर।

**सृष्ट्याम्** — विश्वरचनायाम्, विश्व की रचना में।

**जज्ञे** — प्रादुरभूत्, प्रादुर्भूत हुआ।

**अक्ष्णोः** — नेत्रद्वयत : दो नेत्रों से।

**खम्** — आकाशम्, आकाश को।

| | | |
|---|---|---|
| **गुणैकवृद्ध्या** | — | गुणानामेकैकवृद्धिक्रमेण, गुणों में एक-एक वृद्धि के क्रम के द्वारा। |
| **महाभूतानि** | — | आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इस क्रम से शब्द, स्पर्श, व गंध इन महाभूतों के प्रधान विषय हैं। |
| **जज्ञिरे** | — | समुद्भूतानि, उत्पन्न हुए। |
| **अग्नीषोमौ** | — | अग्निश्च सोमश्चेत्यग्नीषोमाविति छान्दसिकः प्रयोगः। अग्नि व सोम यह वैदिक प्रयोग है। सूर्य अग्निस्वरूप होने से तेज की राशि है तथा चन्द्रमा सोम स्वरूप है। |
| **अङ्गारकादयः** | — | भौमादयः पञ्चताराग्रहाः, मंगल आदि पाँच तारा ग्रह। |
| **तेजोभूखाम्बुवातेभ्यः** | — | तेजोऽग्नितत्त्वं तस्माद्भौमः, भूः पृथ्वी ततो बुधः, खमाकाशं ततो बृहस्पतिः, अम्बु जलं तस्माच्छुक्रः, वातो वायुस्तस्माच्छनिरुत्पन्नः इति। तेजरूपी अग्नि तत्त्व से मंगल, फिर पृथ्वी, फिर बुध, आकाशस्वरूप बृहस्पति,जलस्वरूप से शुक्र तथा वायु से शनि। |
| **सुषिरम्** | — | अनन्तावकाशं छिद्रमिवास्तीति शेषः, अनंत अवकाश रूपी छिद्र सा है। |
| **कटाहद्वितयस्येव सम्पुटम्** | — | तुल्यप्रमाणकटाहद्वयस्य संयोगेन यथा गोलाकृतिरन्तश्छिद्रा भवति तथैवेदं ब्रह्माण्डमिति। समान प्रमाण के दो कटाह (कपालद्वय) के संयोग से जो गोल की आकृति बनती है और उसमें अनंत छिद्र हैं, उसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड है। |

| | | |
|---|---|---|
| **परिधिः** | – | वर्तुलाकारब्रह्माण्डस्य यः परिणाहः सः, गोलाकार ब्रह्माण्ड के आसपास का घेरा। |
| **व्योमकक्षा** | – | व्योम्नः, आकाशस्य कक्षा, आकाशकक्षा। |
| **मन्दामरेज्य-भूपुत्र-सूर्य-शुक्रेन्दुजेन्दवः** | – | मन्दः शनिः, अमरेज्य, देवता जिसकी पूजा करते हैं अर्थात् बृहस्पति, भूपुत्र- पृथ्वी का पुत्र मंगल, सूर्य, शुक्र, इंदुज- चंद्रमा का पुत्र बुध तथा अंत में चंद्रमा। |

## अभ्यासः

**1. संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत**

क) अस्मिन् पाठे कः प्रष्टा कः च उत्तरदाता?

ख) अपः कः सृष्टवान्?

ग) हैमम् अण्डं कथम् अभवत्?

घ) सूर्यः कः उच्यते?

ङ) सूर्यः किं युक्त्वा सर्वदा पर्यटति?

च) व्योमकक्षा का अभिधीयते?

छ) के के ग्रहाः व्योमकक्षायाम् भ्रमन्ति?

ज) काः सप्त पातालभूमयः?

झ) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थाद् उद्धृतः?

**2. अधोलिखितानामाशयम् स्पष्टीकुरुत**

क) हिरण्यगर्भो भगवानेष च्छन्दसि पठ्यते।

ख) गुणैकवृद्ध्या पञ्चेति महाभूतानि जज्ञिरे।

ग) तेजोभूखाम्बुवातेभ्यः क्रमशः पञ्च जज्ञिरे।

3. **रिक्तस्थानानि पूरयत**

क) सङ्कर्षणः.................. सृष्ट्वा वीर्यम् अवासृजत्।

ख) अथ सृष्ट्यां ब्रह्मा ................. चक्रे।

ग) कटाहद्वितयस्येव सम्पुटं ....................।

घ) ब्रह्माण्डमध्ये परिधिः ...................... कथ्यते।

4. क) सृष्टिक्रमं स्वभाषया वर्णयत।

ख) ब्रह्माण्डं किं रूपमस्ति इति स्पष्टीकुरुत।

5. **अधोलिखितपदानाम् अर्थमेलनं क्रियताम्**

| **पदानि** | **अर्थाः** |
|---|---|
| भूः | सूर्यः |
| हैमम् | दिन-रात्री |
| आदित्यः | पृथिवी |
| अहोरात्रम् | आकाशः |
| अङ्गारकः | शनिः |
| व्योम | बुधः |
| मन्दः | मङ्गलः |
| इन्दुजः | स्वर्णम् |

## सप्तमः पाठः

# ऋतुचर्या

यह पाठ महर्षि अग्निवेश द्वारा रचित **चरकसंहिता** नामक आयुर्वेद के ग्रंथ से संकलित किया गया है। इस ग्रंथ के छठे अध्याय में विभिन्न ऋतुओं में आहार से संबंधित नियम बताए गए हैं। अपनी दिनचर्या में किंचित् परिवर्तन करके व्यक्ति दीर्घ आयु तथा स्वस्थ जीवन को प्राप्त करता है। संकलित पद्यों में हेमंत, शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद् इन छः ऋतुओं में मनुष्य को अपनी भोजनचर्या किस प्रकार की रखनी चाहिए, इसका विवेचन किया गया है।

*हेमन्तः*

**गोरसानिक्षुविकृतीर्वसां तैलं नवौदनम्।**
**हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णं चायुर्न हीयते।।1।।**
**वर्जयेदन्नपानानि वातलानि लघूनि च।**
**प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे।।2।।**

*शिशिरः*

**हेमन्तशिशिरौ तुल्यौ शिशिरेऽल्पं विशेषणम्।**
**रौक्ष्यमादानजं शीतं मेघमारुतवर्षजम्।।3।।**
**तस्माद्धैमन्तिके सर्वः शिशिरे विधिरिष्यते।**
**निवातमुष्णं त्वधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत्।।4।।**

कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च।
वर्जयेदन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च।।5।।

*वसन्तः*

वसन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः।
कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून्।।6।।
तस्माद्वसन्ते कर्माणि वमनादीनि कारयेत्।
गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्।।7।।

*ग्रीष्मः*

मयूखैर्जगतः स्नेहं ग्रीष्मे पेपीयते रविः।
स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम्।।8।।
घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन् ग्रीष्मे न सीदति।
लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं च विवर्जयेत्।।9।।

*वर्षा*

भूवाष्पान्मेघनिस्यन्दात् पाकादम्लाज्जलस्य च।
वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः।।10।।
व्यक्ताम्ललवणस्नेहं वातवर्षाकुलेऽहनि।
विशेषशीते भोक्तव्यं वर्षास्वनिलशान्तये।।11।।

*शरद्*

वर्षाशीतोचिताङ्गानां सहसैवार्करश्मिभिः।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति।।12।।
तयान्नपानं मधुरं लघु शीतं सतिक्तकम्।
पित्तप्रशमनं सेव्यं मात्रया सुप्रकाङ्क्षितैः।।13।।

**शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च।**
**शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः।।14।।**

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **नवौदनम्** | – | नये चावल। |
| **वातलानि** | – | वातकारक। |
| **रौक्ष्यं** | – | रूखा। |
| **निचितः** | – | बढ़ा हुआ। |
| **श्लेष्मा** | – | कफ। |
| **वमनादीनि** | – | उल्टी आदि। |
| **दिवास्वप्नम्** | – | दिन में सोना। |
| **मयूखैः** | – | किरणों के द्वारा। |
| **पेपीयते** | – | बार-बार अथवा अत्यधिक पीता है। |
| **सशाल्यन्नम्** | – | धान सहित अन्न। |
| **अनिलशान्तये** | – | वायु की शांति के लिए। |
| **अर्करश्मिभिः** | – | सूर्य की किरणों के द्वारा। |
| **प्रदोषे** | – | रात्रि में। |

**सन्धिविच्छेदः**

| | | |
|---|---|---|
| नवौदनम् | = | नव + ओदनम् |
| चायुः | = | च + आयुः |
| शिशिरेऽल्पम् | = | शिशिरे + अल्पम् |
| विधिरिष्यते | = | विधिः+ इष्यते |
| भाभिरीरितः | = | भाभिः + ईरितः |
| सशाल्यन्नम् | = | सशालि + अन्नम् |

| | | |
|---|---|---|
| सहसैवार्करश्मिभिः | = | सहसा + एव + अर्करश्मिभिः |
| चेन्दुरश्मयः | = | च + इन्दुरश्मयः |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतेन उत्तराणि देयानि**
   - क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः कश्च तस्य प्रणेता?
   - ख) कति ऋतवः भवन्ति? कानि च तेषां नामानि?
   - ग) शिशिरे किं किं वर्जनीयम्?
   - घ) वसन्ते कायाग्निं कः बाधते?
   - ङ) ग्रीष्मे कीदृशम् अन्नपानं हितं भवति?
   - च) कस्मिन् ऋतौ पवनादयः कुप्यन्ति?
   - छ) शरदृतौ पित्तप्रशमनाय किं किं सेव्यम् अस्ति?

2. **रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्**
   - क) हिमागमे .................. लघूनि च अन्नपानानि वर्जयेत्।
   - ख) शिशिरे निवातम् ................. च गृहम् आश्रयेत्।
   - ग) .................... दिवास्वप्नं वर्जयेत्।
   - घ) ग्रीष्मे घृतं पयः ............... भजन् नरः न सीदति।
   - ङ) ............. विमलानि वासांसि प्रशस्यन्ते।

3. **व्याख्यायन्ताम्**
   - क) हेमन्तशिशिरौ तुल्यौ शिशिरेऽल्पं विशेषणम्।
   - ख) मयूखैर्जगतः स्नेहं ग्रीष्मे पेपीयते रविः।
   - ग) शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः।

4. **ऋतुचर्यापाठम् अधिकृत्य प्रत्येकम् ऋतौ किं किं करणीयम् किं किं च न करणीयम् इति सुस्पष्टयत।**

**5. अधोलिखितानि विग्रहपदानि आधृत्य समस्तपदानि रचयत**

यथा – नवम् ओदनम् नवौदनम् कर्मधारय समासः

| | **विग्रहपदानि** | **समस्तपदानि** | **समास नाम** |
|---|---|---|---|
| क) | अन्नानि च पानानि च | ............. | द्वन्द्वः |
| ख) | हेमन्तः च शिशिरः च | ............. | द्वन्द्वः |
| ग) | हिमस्य आगमे | ............... | ष.तत्पुरुषः |
| घ) | कायस्य अग्निम् | ............... | ष. तत्पुरुषः |
| ङ) | अर्कस्य रश्मिभिः | ............... | ष. तत्पुरुषः |

**6. अधोलिखितपदानामर्थमेलनं क्रियताम्**

| | **पदानि** | **अर्थ** |
|---|---|---|
| क) | श्लेष्मा | हवारहित |
| ख) | रौक्ष्यम् | बढ़ा हुआ (जमा हुआ) |
| ग) | निवातम् | वात |
| घ) | निचितः | भारी |
| ङ) | पवनः | हल्का |
| च) | गुरु | वस्त्र |
| छ) | लघु | रूखापन |
| ज) | वासांसि | कफ |

**7. अधोलिखितपदानाम् विपरीतार्थकपदैः सह मेलनं क्रियताम्**

| *पदानि* | *विपरीतार्थकपदानि* |
|---|---|
| उष्णम् | अधिकम् |
| सीदति | शीतानाम् |
| तप्तानाम् | प्रसीदति |
| गुरु | शीतम् |
| अल्पम् | लघु |

## अष्टमः पाठः

# गणितीयविधिः

प्रस्तुत पाठ **भास्कराचार्य** की पुस्तक **लीलावती** से लिया गया है। विज्ञान का कोई भी शोध-तथ्य बिना गणित के अपने स्वरूप को स्पष्ट नहीं कर सकता। वैज्ञानिक, तार्किक एवं खोजपरक बुद्धि के मूल में गणित की विधियों में प्रवीणता है जो शीघ्र हल को ढूँढ़ निकालने के लिए अपरिहार्य है। गणित को प्रायः शुष्क विषय माना जाता है, लेकिन लीलावती इसका अपवाद है। व्याकरण, छंद व अलंकार से अंलकृत होकर खेल-खेल में पद्य के माध्यम से गणितीय प्रक्रिया को सीखा भी जा सकता है ऐसा इस पाठ से स्पष्ट होता है। प्रस्तुत अंश में संकलन एवं व्यवकलन विधि, गुणनविधि, वर्गविधि, घनविधि तथा अंत में क्षेत्रव्यवहार का गणित उदाहरण सहित स्पष्ट किया गया है।

**अये बाले लीलावति मतिमति ब्रूहि सहितान्**
**द्विपञ्चद्वात्रिंशत्-त्रिनवतिशताष्टादश दश।**
**शतोपेतानेतानयुतवियुतांश्चापि वद मे**
**यदि व्यक्ते युक्तिव्यवकलनमार्गेऽसि कुशला।।1।।**

**(अभिन्नपरिकर्माष्टकम् - संकलनव्यवकलनविधिः)**

**बाले बालकुरङ्गलोलनयने लीलावति प्रोच्यतां**
**पञ्चत्र्येकमिता दिवाकरगुणा अङ्का कति स्युर्यदि।**
**रूपस्थानविभागखण्डगुणने कन्याऽसि कल्याणिनि**
**च्छिन्नास्तेन गुणेन ते च गुणिता जाताः कति स्युर्वद।।2।।**

**(अभिन्नपरिकर्माष्टकम् गुणनविधिः)**

सखे नवानां च चतुर्दशानां ब्रूहि त्रिहीनस्य शतत्रयस्य।
पञ्चोत्तरस्याप्ययुतस्य वर्गं जानासि चेद्वर्गविधानमार्गम्।।3।।

(वर्गविधिः)

नवघनं त्रिघनस्य घनं तथा कथय पञ्च घनस्य घनं च मे।
घनपदं च ततोऽपि घनात् सखे यदि घनेऽस्ति घना भवतो मतिः।।4।।

(घनविधिः)

कोटिश्चतुष्टयं यत्र दोस्त्रयं तत्र का श्रुतिः।
कोटिं दोः कर्णतः कोटिश्रुतिभ्यां च भुजं वद।।
साङ्घ्रित्रयमितो बाहुर्यत्र कोटिश्च तावती।
तत्र कर्णप्रमाणं किं गणक? ब्रूहि मे द्रुतम्।।5।।

(क्षेत्रव्यवहारः भुजज्ञानम्)

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **मतिमति** | — | बुद्धिमति। |
| **ब्रूहि** | — | कथय, कहो। |
| **सहितान्** | — | योगफलान्, जोड़ कर प्राप्त हुए फल को। |
| **द्विपञ्चद्वात्रिंशत्त्रिनवतिशत** | — | द्वि (2), पञ्च (5), द्वात्रिंशत् (32), त्रिनवतिशत (193)। |
| **अष्टादशदश** | — | अष्टादश (18), दश (10) |
| **शतोपेतान्** | — | 100 में जोड़कर। |
| **अयुत** | — | 10,000 |
| **व्यवकलन** | — | विशोधन, घटाना। |

**उपपत्ति** — समानजात्योरेव योगान्तरं भवति इति नियमादेकादिस्थानीयाङ्केष्वेकादि स्थानीयाङ्कस्य योगो वियोगो वा समुचितः।

**उदाहरण** – यहाँ क्रम व उत्क्रम रीति से योग व अन्तर करने की विधि बतायी गयी है। जैसे 325 में 125 को जोड़ना है तो पहले 325 के नीचे इकाई के स्थान में 5 को और दहाई के स्थान पर 2 को और फिर सैंकड़े की जगह 1 को लिखा तो 325 ऐसा हुआ।
125

अब पाँच में पाँच को जोड़ा तो दस हुआ, दस का शून्य लिखकर शेष बचे हुए एक को दहाई वाले अंकों में जोड़ा तो 2+2 =4 , 4+1=5 हुआ, इसको शून्य के बाँई तरफ रख (लिख) देंगे। बाद में सैंकड़े स्थान वाले अंकों को जोड़ा तो 3+1= 4 हुआ। यह क्रमरीति से आया **योगफल है।**

उत्क्रम रीति से योग करने के लिए 325 के नीचे 125 को रखा। यहाँ बायीं तरफ से 3 के नीचे 1 है, अतः दोनों के योगफल 4 को अलग लिख दिया, इसके बाद 2 में 2 को जोड़ने से 4 हुआ, उसको पहले वाले 4 के दायीं तरफ रखा। अब इकाई वाले अंकों का योग किया तो दस हुआ। दस का शून्य पहले 4 की दाहिनी तरफ रख दिया और एक को शून्य की बायीं तरफ वाले 4 के ऊपर लिख दिया तो ऐसा हुआ $\overset{1}{4}40$, इनका योग किया तो 450 पहले **योगफल** के समान हुआ।

| क्रमरीति : | | उत्क्रमरीति : | | |
|---|---|---|---|---|
| | 325 | | 325 | 1 |
| + | 125 | | 125 | 440 |
| | 450 | | 450 | 450 |

योगफल – 450

## व्यवकलन

क्रम रीति से अन्तर करने के लिए 325 के नीचे 125 को रख दिया। बाद में दाहिनी तरफ के ऊपर वाले 5 में नीचे का 5 घटाया तो शून्य बचा, उसको लिख लें। फिर 2 में से 2 को घटाया तो शेष शून्य को पहले के शून्य से बायीं तरफ लिखा, अन्त में तीन में से 1 घटाया तो 2 शेष रहा, इसको लिखे हुए शून्य के बायीं तरफ लिख दिया तो उत्तर हुआ - 200

उत्क्रम रीति से घटाना हो तो घटने वाले अंकों को ऊपर लिखो और जिसमें से घटेगा उसको नीचे लिखकर बायीं ओर से घटाना प्रारम्भ करो। जैसे 325 में से 135 घटाना है तो 325 के ऊपर 135 को लिखा यथा 135। अब नीचे की बायीं तरफ में जो 3 है उसमें से ऊपर लिखे
325

एक को घटाया तो शेष 2 बचा। लेकिन आगे 2 में 3 नहीं घटेगा, अतः शेष 2 को लिखा। दहाई के स्थान में से एक को लेकर 2 में जोड़ा तो हुआ 10+2=12 इसमें से ऊपर वाले 3 को घटाया तो शेष 9 रहा। इसको पहले शेष की दाहिनी तरफ लिख दिया क्योंकि 5 में से 5 घट जाएगा, 5 में से 5 को घटाने पर शून्य शेष रहा। इसको लिखित शून्य से दाहिनी तरफ रखा तो अंतर 190 हुआ।

**विशेष** : Modern Mathematics में संकलन को Addition और व्यवकलन को Subtraction कहा जाता है।

## गुणनविधिः

| | | |
|---|---|---|
| बालकुरंगलोलनयने | — | बाल कुरंग (हरिण) के समान चंचल नेत्रों वाली। |
| प्रोच्यताम् | — | कथ्यताम्, कहो। |
| पञ्चत्र्येकमिता | — | पञ्च (5), त्रि (3), एक (1) अङ्कानां वामतो गतिः अतः 135 |
| दिवाकरगुणाः | — | 12 से गुणा करने पर (द्वादश आदित्य माने जाते हैं) |

| | | |
|---|---|---|
| रूपस्थानविभाग-खण्डगुणने | — | रूप, स्थान विभाग व खण्ड गुणन की रीति से। |
| छिन्नाः | — | भक्ताः, भाग देने पर। |
| गुणिताः | — | गुणा किए गए अंक। |
| उपपत्ति | — | |

1. गुणयितुं योग्यो गुण्यस्तथा येन गुण्यते स गुणक इति। गुणकस्थानस्थितानां गुण्यानां योगो हि गुणनफलं, तत्तु गुण्यगुणकयोर्घात-तुल्यमत उपपन्नः प्रथमः प्रकारः।

2. अत्र यदि च = प ×फ। तदा गुणनफलं अ×च = अ×(प+फ) =अ×प+अ×फ एतेनोपपन्नः द्वितीयः प्रकारः।

3. कल्प्यते गु =गुण्यः। गुणक =प। इसलिए गुणनफलं = गु ×प अत्र यदि प/अ =क, तदा प = अ×क। इसलिए गुणनफलं गु×अ×क,अत उपपन्नस्तृतीयः प्रकारः।

4. यदि गुणकः = 10अ + क, तदा गु.फ.=गुण्य ×(10 अ+क) = गुण्य × 10 अ + गुण्य ×क। अत्र क एकस्थानीयस्तथा 'अ' दशस्थानीयस्तयोर्गुण्यगुणितयोः स्थानवशेन योगो गुणनफलसमो दृश्यते, अत उपपन्नश्चतुर्थः प्रकारः।

**उदाहरण**

1. यदि गुण्य 135 हो और गुणक 12 तब गुणनफल प्रथम प्रकार से

$$\begin{array}{r} 135 \times 12 \\ \hline 270 \\ +\ 135 \\ \hline 1620 \\ \hline \end{array}$$ गुणनफल

2. गुणरूपविभाग में गुणक के खण्ड कर दो यथा 12 = 8+4, दोनों खण्डों से अलग-अलग गुणा कर, दोनों गुणनफलों को जोड़ दो वह ही उत्तर होगा। यथा -

$$\begin{array}{r} 135 \\ \times\ 8 \\ \hline 1080 \end{array} \quad \text{तथा} \quad \begin{array}{r} 135 \\ \times\ 4 \\ \hline 540 \end{array}$$

दोनों का योग करने पर

1080 + 540 =1620 गुणनफल होगा।

इस प्रकार गुणक को सुविधानुसार कितने ही भागों में बाँटा जा सकता है।

यथा =12 = 4+4+4

12 = 3+3+3+3

12 = 2+2+2+2+2+2

12 = 10+2 इत्यादि।

3. स्थानविभाग रीति से गुणक के दो खण्ड कर दो यथा 1 और 2 दोनों से गुण्य को पृथक्-पृथक् गुणा करो तथा गुणनफलों को स्थानयुति से जमा कर दो यथा –

$$\begin{array}{r} 135 \\ \times\ 1 \\ \hline 135 \end{array} \qquad \begin{array}{r} 135 \\ \times\ 2 \\ \hline 270 \end{array}$$

स्थानयुति करने पर –

$$\begin{array}{r} 270\phantom{0} \\ +\ 135 \\ \hline 1620 \end{array} \quad \text{गुणनफल}$$

**विशेष** : Modern Mathematics में गुणनविधि को Multiplication कहा जाता है।

## वर्गविधिः

पञ्चोत्तरस्याप्ययुतस्य = 10005

वर्गविधानमार्गम् = वर्ग करने की विधि को।

उपपत्तिः - न्यासः 1, 9, 14, 297, 10005, एषां यथोक्तकरणेन जाता वर्गाः – 81, 196, 88209, 100100025 अथवा नवानां खण्डे (4और 5) अनयोराहति- 20, द्विर्निध्नी (40) तत्खण्डवर्गैक्येन (41),युता जाता सैव कृतिः = 81

उदाहरण – पहली रीति से –

| | | |
|---|---|---|
| $9^2$ | = | $9 \times 9 = 81$ |
| $14^2$ | = | $14 \times 14 = 196$ |
| $297^2$ | = | $297 \times 297 = 88209$ |
| $10005^2$ | = | $10005 \times 10005 = 100100025$ |

दूसरी विधि से –

यदि 297 का वर्ग करना है तो पहले अन्त्य अंक 2 के वर्ग 4 को 2 के ऊपर रखा। अब द्विगुणित अंतिम अंक 4 से आगे के 9 और 7 को अलग–अलग गुणा कर उनके ऊपर रख दिया। बाद में 2 को छोड़कर शेष 97 को आगे उठाकर रखा। फिर 9 के वर्ग 81 को उसके ऊपर निवेश किया। अब द्विगुणित अंतिम अंक 18 को 7 से गुणा करने पर 126 हुआ। इसमें 6 को 7 के ऊपर, 2 को 9 के ऊपर और 1 को उसके बाईं तरफ वाले अंक के ऊपर रखा फिर 9 को छोड़ा ओर 7 को

योग करने की रीति

```
 1
 82
3214
46869
-----
88209  – गुणनफल वर्ग करने पर
```

उठाकर आगे लिख कर उसका वर्ग 49 को उसके ऊपर लिख दिया। आगे अंक नहीं है, अतः क्रिया समाप्त हो गयी। शेष में सबों को जोड़ने पर 88209 वर्ग हुआ।

विशेष – Modern Mathematics में इसे square कहते हैं।

## घनविधिः

नवघनम् — नौ का घन

उपपत्तिः — न्यासः 9, 27 व 125 जाताः क्रमेण घनाः 729, 19683, 1953125 अथवा राशि = 9 अस्य खण्डे 4, 5; आभ्यां राशिर्हतः =180, त्रिनिघ्नश्च 540 खण्डघनैक्येन 189 युतो जातो घनः 729 वा राशि 9 अस्य मूलम् 3, घन 27 अस्य वर्गो नवानां घनः = 729 यो वर्गघनः स एव वर्गमूलघनवर्गः। बीजगणितेऽस्योपयोगः।

उदाहरण – पहली रीति से –

$9^3 = 9 \times 9 \times 9 = 729$

$27^3 = 27 \times 27 \times 27 = 19683$

$125^3 = 125 \times 125 \times 125 = 1953125$

दूसरी रीति से –

27 का घन करना है, तो वहाँ अन्त्य अंक 2 का घन 8 को लिखकर अंतिमांक 2 के वर्ग 4 को त्रिगुणित आदिम अंक (7 × 3) = 21 से गुणा करने पर (21× 4) = 84 हुआ। इसको स्थानांतर करके अर्थात् 8 घन के ऊपर 8 लिखकर उसके दायें भाग में एक स्थान बढ़ाकर 4 लिखा। बाद में आदिम अंक 7 के वर्ग 49 को त्रिगुणित अंतिमांक (3 × 2) = 6 से गुणा करने पर 294 हुआ। इसको उक्त क्रम से लिखा। अंत में आदिम अंक 7 का घन 7×7×7 = 343 को रखकर सबों को

स्थानांतर से जोड़ने पर 19683 हुआ।

जोड़ने की विधि

$$\begin{array}{r} 23 \\ +\ 894 \\ +\ 8443 \\ \hline 19683 \end{array}$$

## क्षेत्रव्यवहारः

कोटिश्चतुष्टयम् – कोटि 4 है।

दोस्त्रयम् भुज 3 है।

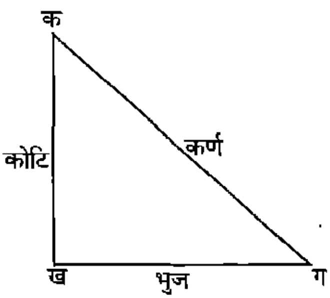
साङ्घ्रित्रयमितो $3\frac{1}{4}$

बाहु भुज

उपपत्तिः स्पष्टमेव।

उदाहरण – मान लो क ख ग एक समकोण त्रिभुज ( Right Angle Triangle ) है तो इसमें कख लम्ब (Perpendicular) को कोटि (Perpendicular) कहेंगे तथा खग को भुज (Base) कहेंगें तथा कग को कर्ण (Hypotenuse) कहेंगे। आधुनिक गणित में उन्हें Trigonometric Ratios कहते हैं।

1. यदि कोटि 4 हो, भुज 3 हो तो कर्ण का मान निकालने के लिए भुजवर्ग करेंगे – $3\times3=9$,फिर कोटिवर्ग $4\times4=16$ इन दोनों का योग $16+9=25$ तथा इसका वर्गमूल (Square Root) =5 कर्ण का मान होगा।



2. यदि कर्ण 5 है, भुज 3 है तो कोटि के मान को निकालने के लिए पहले की तरह दोनों का वर्ग करेंगे – 5×5=25 तथा 3×3=9 घटाने पर 25-9=16, वर्गमूल करने पर 4 कोटि का मान होगा।

3. यदि कर्ण 5 तथा कोटि 4 है तो भुज के मान के लिए दोनों का वर्ग करके 5×5=25, 4×4=16 घटाने पर 25–16 = 9 वर्गमूल करने पर 3, भुज का मान होगा।

4. यदि भुज $3\frac{1}{4}$ हो और कोटि भी उतनी ही हो तो कर्ण का मान

भुजवर्ग = $3\frac{1}{4}\times3\frac{1}{4}=\frac{13}{4}\times\frac{13}{4}=\frac{169}{4}$

कोटि वर्ग = $3\frac{1}{4}\times3\frac{1}{4}=\frac{13}{4}\times\frac{13}{4}=\frac{169}{4}$

जोड़ने पर = $\frac{169}{4}+\frac{169}{4}=\frac{338}{16}=\frac{169}{8}$

इसलिए कर्ण = $\frac{169}{8}$, मूल न होने से करणी गत अवगड्क ही कर्ण का मान होगा।

## अभ्यासः

1. **संस्कृतमाश्रित्य उत्तराणि लिखत**
   - क) सङ्कलनविधिं स्पष्टीकुरुत।
   - ख) रूपस्थानविभागखण्डगुणने – इत्यस्याशयं स्पष्टं कुरुत।
   - ग) वर्गः कथं भवति?
   - घ) भुजानयनं कथं क्रियते?
   - ङ) प्रस्तुतः पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः? कश्च तस्य लेखकः?

2. रिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया

क) $4^3$ = ..................

ख) $259^2$ = ..................

ग) कोटिः =10, भुज = 8, तत्र कर्णः ..................

घ) 12 X ( 50+20) = ..................

ङ) 525 + 223 = ..................

च) 802 - 105 = ..................

3. कर्णप्रमाणम् कथं ज्ञायते? सोदाहरणं स्पष्टीक्रियताम्।

4. घनविधिः सोदाहरणं व्याख्यायताम्।

5. स्पष्टीक्रियन्ताम् – गुण्यः, गुणकम्, व्यवकलनम्, भुजः, कर्णः, कोटिः।

नवमः पाठः

# प्राचीनं-यन्त्र-विज्ञानम्

प्रस्तुत पाठ **श्रीमद्भास्कराचार्य** के ग्रंथ **सिद्धान्तशिरोमणि** के **गोलाध्याय** से लिया गया है, जिसमें गोल की महत्ता वैज्ञानिक विधियों से प्रतिपादित की गयी है। प्राचीनकाल में समय की इकाई के सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरूप को जानने के लिए यंत्रों की सहायता ली जाती थी। इसके लिए वेधशालाओं (Observatories) का निर्माण किया जाता था। प्रस्तुत अंश में काल-ज्ञान के लिए दस यंत्रों का विवेचन है, जिनमें धी-यंत्र सर्वोत्तम है। यद्यपि इसमें कहे गए यंत्र इतने सूक्ष्म काल-भेद को प्रस्तुत नहीं करते, परंतु प्राचीन भारतीय विद्वानों की यांत्रिकी प्रवृत्ति (Technical sense) की ओर संकेत अवश्य करते हैं, जो कि बाद में पुष्पित व पल्लवित हुई।

**दिनगतकालावयवा ज्ञातुमशक्या यतो विना यन्त्रैः।**
**वक्ष्ये यन्त्राणि ततः स्फुटानि सङ्क्षेपतः कतिचित्।।1।।**
**गोलो नाडीवलयो यष्टिः शङ्कुर्घटी पारमार्थिकं यन्त्रम्।**
**चापं तुर्यं फलकं धीरेकं पारमार्थिकं यन्त्रम्।।2।।**

*गोलयन्त्रम्*

**अपवृत्तगरविचिह्नं क्षितिजे धृत्वा कुजेन संसक्ते।**
**नाडीवृत्ते बिन्दुं कृत्वा धृत्वाऽथ जलसनं क्षितिजम्।।3।।**

रविचिह्नस्य च्छाया पतति कुमध्ये यथा तथा विधृते।
उडुगोले कुजबिन्द्वोर्मध्ये नाड्यो द्युयाताः स्युः।।4।।

*नाडीवलयम्*

अपवृत्ते कुजलग्ने लग्नं चाथो खगोलनलिकान्तः।
भूस्थं ध्रुवयष्टिस्थं चक्रं षष्ट्या निजोदयैश्चाङ्क्यम्।।5।।
व्यस्तैर्यष्टीभायामुदयेऽर्कं न्यक्ष्य नाडिका ज्ञेयाः।
इष्टच्छायासूर्यान्तरेऽथ लग्नं प्रभायां च।।6।।
केनचिदाधारेण ध्रुवाभिमुखकीलकेऽत्र धृते।
अथवा कीलच्छायातलमध्ये स्युर्नता नाड्यः।।7।।

*घटिका*

घटदलरूपा घटिका घटिका ताम्री तले पृथुच्छिद्रा।
द्युनिशनिमज्जनमित्या भक्तं द्युनिशं घटीमानम्।।8।।

*शङ्कुः*

समतलमस्तकपरिधिर्भ्रमसिद्धो दन्तिदन्तजः शङ्कुः।
तच्छायातः प्रोक्तं ज्ञानं दिग्देशकालानाम्।।9।।
चक्रं चक्रांशाङ्कं परिधौ श्लथ शृङ्खलादिकाधारम्।
धात्री त्रिभ आधारात् कल्प्या भार्धेऽत्र खार्धे च।।10।।
तन्मध्ये सूक्ष्माक्षं क्षिप्त्वाऽर्काभिमुखनेमिकं धार्यम्।
भूमेरुन्नतभागास्तत्राक्षच्छायया युक्ता।।11।।
तत्खार्धान्तश्च नता उन्नतलवसंगुणीकृतं द्युदलम्।।
द्युदलोन्नतांशभक्तं नाड्यः स्थूलाः परैः प्रोक्ताः।।12।।

*चापं तुर्यं च*

**दलीकृतं चक्रमुशन्ति चापं कोदण्डखण्डं खलु तुर्यगोलम्।।13।।**

*फलकम्*

**दृङ्मण्डलेऽत्र स्फुटकाल उक्तः सुखेन नान्यैर्यतितं मयाऽतः।**
**सद्गोलयुक्तेर्गणितस्य सारं स्पष्टं प्रवक्ष्ये फलकाख्ययन्त्रम्।।14।।**

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

**दिनगतकालावयवाः** — दिनगताः सूर्योदयकालादभीष्टतद्दिनीयकाले ये कालावयवाः घट्यादिरूपास्ते। सूर्योदय काल से अभीष्ट दिन के काल के अवयव-घटी आदि का ज्ञान। (अभिप्राय यह है कि स्थूल व सूक्ष्म भेद से समय की आनन्त्योन्मुखी गति का ज्ञान करना सम्भव नहीं है।)

**स्फुटानि** — सूक्ष्माणि, सूक्ष्म।

**यन्त्राणि** — कालज्ञान के लिए मनुष्य द्वारा निर्मित भौतिक यंत्र।

**पारमार्थिकं यंत्रम्** — आध्यात्मिक यंत्र (सर्वत्र गमनशील, सर्वज्ञता बोधक यंत्र)

**अपवृत्तगरविचिह्नम्** — खगोलान्तर्क्षगोलस्थक्रान्तिवृत्ते मेषादेस्तत्कालिकस्पष्टार्कयोगं दत्त्वा कृतचिन्ह-मित्यर्थः। खगोल के अंदर नक्षत्र चक्र में अथवा क्रान्तिवृत्त में जहाँ मेषादि राशि स्पष्ट सूर्य द्वारा भुक्त हो, वहाँ चिन्ह लगा दो।

**क्षितिजे** — खगोलबद्धक्षितिजप्राग्भागसमसूत्रे, खगोल से बद्ध क्षितिज के पूर्व भाग में।

**धृत्वा** — कृत्वा, करके।

| | | |
|---|---|---|
| **कुजेन** | — | क्षितिजवृत्तप्राग्भाप्रदेशेन, क्षितिज वृत्त के पूर्व प्रदेश द्वारा। |
| **संसक्ते** | — | समसूत्रतया संलग्ने। |
| **नाडीवृत्ते** | — | विषुवत्प्रदेशे। |
| **बिन्दुम्** | — | चिह्नम्। |
| **जलसनम्** | — | जलं यथा समानमस्ति नोच्चावचं तद्वत्, जल जैसे समान होता है वैसे ही, न ऊँचा न नीचा। |
| **छाया** | — | आकाशस्थसूर्यबिम्बजनिता छाया, आकाश में स्थित सूर्य के बिम्ब से उत्पन्न हुई छाया। |
| **कुमध्ये** | — | भूगोलमध्यगर्भे, भूगोल के मंध्य भाग में। |
| **उडुगोले** | — | नक्षत्रगोले, नक्षत्र चक्र में। |
| **कुजलग्ने** | — | क्रान्तिवृत्ते क्षितिजसंलग्ने लग्नम्, क्रान्ति वृत्त में क्षितिज के लगने पर। |
| **खगोलनलिकान्तः** | — | नलिकाद्वयप्रोतं खगोलमुक्तदिशा कृत्वा तन्नलिकयोः मध्य इत्यर्थः, दो नलिकाओं द्वारा खगोल की दिशा जानकर, उन नलिकाओं के मध्य। |
| **ध्रुवयष्टिस्थम्** | — | नलिकाद्वयप्रोताग्रध्रुवयष्टिप्रोतं चक्रं चारुदारुनिर्मितमिष्टव्यासार्धजनितपरिधिप्रमाणम्। इष्ट सुदृढ़ लकड़ी की। |
| **यष्टी भा** | — | यष्टिछाया। |
| **उदये** | — | उदयकाल में। |
| **अर्कं न्यक्ष्य** | — | सूर्य को स्थापित करके। |
| **ध्रुवाभिमुखकीलके** | — | अभीष्ट समय में कील की (छाया)। |
| **तलमध्ये** | — | यंत्र, तल के मध्य में। |
| **नाड्यः** | — | घट्यः, घटियाँ। |
| **घटदलरूपा** | — | दो बड़े जलपूर्ण पात्रों (घड़ों)में। |
| **ताम्री** | — | ताँबे से निर्मित। |

| | | |
|---|---|---|
| **तले** | — | आधार में (घट के नीचे)। |
| **पृथुच्छिद्रा** | — | स्थूल छिद्र वाली। |
| **द्युनिशनिमज्जनमित्या** | — | एतत्पात्रस्थ जलपूर्णपात्रेऽनवरत-जलागमने-नाहोरात्रे निमज्जनसंख्ययाऽहोरात्र प्रमाणम्, जलपूर्ण पात्र में निरन्तर जल का आयाम एक दिन व रात (60 घटी) में हो इस प्रमाण के द्वारा। |
| **भक्तम्** | — | विभाजितम्, विभाजित करके। |
| **समतलमस्तकपरिधिः** | — | तलं मूलम्। मस्तकमग्रम्। तयोः परिधी समौ यस्येत्येतादृशः। तल मूल को तथा मस्तक अग्रभाग को कहते हैं। इन दोनों की परिधि के समान। |
| **भ्रमसिद्धो** | — | समपरि (धि) वस्तुकरणं यन्त्रं लोके 'चरखा' इत्युच्यते, तत्संलग्नतया भ्रमेण तादृशः सिद्धो भवतीत्यर्थः। |
| **दन्तिदन्तजः** | — | हाथी के दाँत का। |
| **चक्रांशांकम्** | — | धातुमयं दारुमयं वा समं चक्रम्, धातु अथवा काष्ठ से निर्मित चक्र। |
| **श्लथ शृङ्खलादिकाधारम्** | – | शिथिल आधार (भ्रमण योग्य) बनाकर। |
| **तन्मध्ये** | — | (सुषिर) छिद्र युक्त आधार में। |
| **सूक्ष्माक्षम्** | — | सूक्ष्म रेखा गमनशील (चक्रभ्रमणावसर सुविधा के लिए) (लकड़ी देनी चाहिए, जिसे अक्ष से सम्बोधित करते हैं) |
| **क्षिप्त्वा** | — | डालकर। |
| **अर्काभिमुखनेमिकम्** | — | 90 अंशों पर परिधि, सूर्याभिमुख परिधि। |
| **तत्खार्धान्तश्च** | — | वहाँ से क्षितिज गत चिन्ह तक |
| **नतभागः** | — | नतांश। |
| **उन्नतलवः** | — | उन्नतांश। |

| | | |
|---|---|---|
| **दलीकृतम्** | — | (चक्र यंत्र को) आधा करने पर। |
| **उशन्ति** | — | वदन्ति, कहते हैं। |
| **कोदण्डखण्डम्** | — | कोदण्डस्य धनुषः खण्डमर्धं तुर्यगोलं, धनुष के खण्ड को। |
| **दृङ्मण्डले** | — | दृग्वृत्तानुकल्पचक्रादियंत्रम् , दृक् मण्डल में। |
| **स्फुटकालः** | — | सूक्ष्मकाल, अतिसूक्ष्म दिनगतकाल का प्रकार। |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत**
   - क) यन्त्राणां प्रयोजनं वर्ण्यताम्।
   - ख) गोलयन्त्रस्य निर्माणं कथं भवति?
   - ग) घटीमानम् किम्?
   - घ) दिग्देशकालानां ज्ञानं शङ्कुयन्त्रेण कथं जायते?
   - ङ) तुर्ययन्त्रं कथं भवति?
   - च) फलकयन्त्रवर्णनं सङ्क्षेपेण लिखत।
2. **अस्य पाठस्य पृष्ठभूमौ कः ग्रन्थः अस्ति, तमाश्रित्य संक्षिप्तं लेखं लिखत?**
3. **अस्य पाठस्य सारः स्वभाषया लेखनीयः।**
4. **सूक्ष्मकालग्रहणेन के लाभाः सन्ति?**
5. **स्पष्टीक्रियताम्**

   **क्षितिजम्, नाडीवृत्तम्, स्फुटकालः, शङ्कुः, चक्रम्, लग्नम्।**
6. **व्याख्यां कुरुत**
   - क) धीरेकं पारमार्थिकं यन्त्रम्।
   - ख) दिनगतकालावयवा ज्ञातुमशक्या विना यन्त्रैः।
   - ग) तच्छायातः प्रोक्तं ज्ञानं दिग्देशकालानाम्।
   - घ) सद्गोलयुक्तेर्गणितस्य सारं स्पष्टं प्रवक्ष्ये फलकाख्ययन्त्रम्।

## दशमः पाठः

# शुल्कव्यवहारः

प्रस्तुत पाठ कौटिल्यरचित **अर्थशास्त्र** के **शुल्कव्यवहार** प्रकरण से लिया गया है। कौटिल्य की अर्थनीति के प्रमुख तीन सिद्धांत हैं – पहले सिद्धांत के अंतर्गत ऐसे उद्योगों ( Industries) को रखा गया है जिन पर राज्य का स्वामित्व हो और जो राज्य के द्वारा ही संचालित व संगठित हों। इन उद्योगों की पूँजी (Capital), श्रम (Labour), और प्रबंध (Management) का दायित्व राज्य पर ही निर्भर करे। दूसरे प्रकार के उद्योगों का संबंध जनता से है। द्वितीय सिद्धांत के अंतर्गत इस श्रेणी के उद्योग यथा कृषि, गो-पालन, वस्त्र-निर्माण आदि राज्य के नागरिकों की निजी संपत्ति (Private property) के रूप में माने गये। कौटिल्य की अर्थनीति का तीसरा सिद्धांत समाज में ऐसी सुव्यवस्था का निर्माण करना है जिसके अनुसार राज्य के समस्त उत्पादन (Production) वितरण ( Distribution) और उपभोग (Consumption) पर शासनसत्ता का नियंत्रण बना रहे। इसीलिए राजा जनता पर कर लगाता था जिसे इस प्रस्तुत अंश में शुल्क की संज्ञा दी गयी है तथा आधुनिक वाणिज्य जगत् इसे Taxation कहता है। किस-किस मद (Item) पर कितना कर निर्धारित किया जाए, इसका वर्णन इस पाठ में है।

1. **शुल्कव्यवहारो बाह्यमाभ्यन्तरं चातिथ्यम्, निष्क्राम्यं, प्रवेश्यं च शुल्कम्।**
2. **प्रवेश्यानां मूल्यपञ्चभागः।**

3. पुष्पफलशाकमूलकन्दवल्लिक्यबीजशुष्कमत्स्यमांसानां षड्भागं गृह्णीयात्।
4. शङ्खवज्रमणिमुक्ताप्रवालहाराणां तज्जातपुरुषैः कारयेत्, कृतकर्मप्रमाणकालवेतनफल-निष्पत्तिभिः।
5. क्षौमदुकूलक्रिमितानकङ्कटहरित्तालमनःशिलाहिंगुलुकलोहवर्णधातूनां चन्दनागुरुकटुककिण्वावराणांसुरादन्ताजिनक्षौमदुकूलनिकरास्त-रणप्रावरणक्रिमिजातानामजैलकस्य च दशभागः, पञ्चदशभागो वा।
6. वस्त्रचतुष्पदद्विपदसूत्रकार्पासगन्धभैषज्यकाष्ठवेणुवल्कचर्ममृद्भाण्डानां धान्यस्नेहक्षारलवणमद्यपक्वान्नादीनां च विंशतिभागः पञ्चविंशतिभागो वा।
7. द्वारादेयं शुल्कपञ्चभागः आनुग्राहिकं वा यथादेशोपकारं स्थापयेत्।
8. जातिभूमिषु च पण्यानामविक्रयः।
9. खनिभ्यो धातुपण्यादाने षट्छतमत्ययः।
10. पुष्पफलवाटेभ्यः पुष्पफलादाने चतुष्पञ्चाशत्पणो दण्डः।
11. षण्डेभ्यः शाकमूलकन्दादाने पादोनं द्विपञ्चाशत्पणः।
12. क्षेत्रेभ्यः सर्वसस्यादाने त्रिपञ्चाशत्पणः, पणोऽध्यर्धपणश्च सीतात्ययः।

अतो नवपुराणानां देशजातिचरित्रतः।
पण्यानां स्थापयेच्छुल्कमत्ययं चापकारतः।।

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

शुल्कव्यवहारः — शास्त्रानुसारशुल्कसङ्ग्रहः, शास्त्र द्वारा निर्दिष्ट शुल्क (कर-वसूली करना) इकट्ठा करना।

बाह्यमाभ्यन्तरम् — बाह्य-अपने राज्य में उत्पन्न वस्तुओं पर चुंगी आभ्यन्तर-राजमहल तथा राजधानी के भीतर उत्पन्न होने वाली वस्तुओं की चुंगी।

| | | |
|---|---|---|
| **आतिथ्यम्** | — | विदेश से आने वाले माल पर चुंगी। |
| **निष्क्राम्यम्** | — | बाहर जाने वाला माल ( निर्यात का सामान)। |
| **प्रवेश्यम्** | — | बाहर से आने वाला माल (आयात का सामान)। |
| **वल्लिक्यबीज** | — | धान्य। |
| **शुष्कमत्स्य** | — | सूखी मछली। |
| **गृह्णीयात्** | — | ग्रहण की जानी चाहिए। |
| **वज्र** | — | हीरा। |
| **तज्जातपुरुषैः** | — | उन-उन (यथा मणि, मुक्ता, प्रवाल आदि) विशेषज्ञों के द्वारा। |
| **क्षौमदुकूलं** | — | मोटा व महीन रेशमी कपड़ा। |
| **अगरु** | — | अगर नाम का सुगन्धित द्रव्य। |
| **कटुककिण्वावराणाम्** | — | कड़वे और मादक बीजों से निकाला गया द्रव्य। |
| **दन्त** | — | हाथीदाँत |
| **अजिन** | — | मृगचर्म |
| **आस्तरण** | — | बिछौना |
| **प्रावरण** | — | ओढना |
| **कार्पास** | — | कपास |
| **भैषज्य** | — | औषधि या दवाई। |
| **वेणु** | — | बाँस |
| **वल्क** | — | छाल |
| **मृद्भाण्डानाम्** | — | मिट्टी के बरतनों का। |
| **स्नेह** | — | घी और तेल |
| **क्षारलवण** | — | खारा नमक |

**द्वारादेयम्** — द्वारपाल को चाहिए।
**आनुग्राहिकम्** — नगर के प्रधान द्वार से प्रविष्ट होने वाली (वस्तुयें)।
**जातिभूमिषु** — जिन प्रदेशों में जो चीजें पैदा होती हैं, उन पर।
**अविक्रय** — न बेचने योग्य।
**खनिभ्यो** — खानों से तैयार हुआ।
**पण** — उस समय चलने वाली मुद्रा का नाम।
**क्षेत्रेभ्यः** — खेतों से।
**सस्य** — अनाज।

## अभ्यासः

1. **संस्कृतभाषया उत्तराणि दीयन्ताम्**
   क) शुल्कव्यवहारस्य के प्रकाराः आसन्?
   ख) मूल्यपञ्चभागः अस्याभिप्रायः कः?
   ग) पुष्पफलशाकमूलकन्देषु शुल्कस्य निर्धारणं कथम् भवति स्म?
   घ) मृद्भाण्डोपरि शुल्कस्य सीमा का?
   ङ) पुष्पफलवाटेभ्यः पुष्पफलादाने कति पणाः दण्डः?
2. **व्याख्येयः**
   अतो नवपुराणानां देशजातिचरित्रतः।
   पण्यानां स्थापयेच्छुल्कमत्ययं चापकारतः।।
3. **शुल्कव्यवहारस्य किं प्रयोजनम्?**
4. **अस्य पाठस्य सारं हिन्दीभाषया स्पष्टीकुरुत?**
5. **टिप्पण्यः लिख्यन्ताम्**
   आतिथ्यम्, निष्क्राम्यम्, प्रवेश्यानाम्, आनुग्राहिकम्, पञ्चविंशतिभागः, सस्यम्।

## एकादशः पाठः

# व्यावसायिकपत्रव्यवहारः

प्रस्तुत पाठ **कौटिल्य** के **अर्थशास्त्र** के **शासनाधिकार** से लिया गया है। राजा की आज्ञा का नाम शासन है। जो कुछ भी राजा कहे, उसे लिखकर ही पहुँचाया जाता है, इसलिए किस प्रकार पत्र लिखा जाए, उसमें क्या आवश्यक गुण हों, कौन-सा लिखा गया पत्र श्रेष्ठ कोटि में आता है तथा पत्र लिखने में किस प्रकार दोषों से सावधान रहा जाए, इसका वर्णन प्रस्तुत अंश में है। वाणिज्य प्रबंधन (Business Administration) में दक्षता हेतु यह महत्त्वपूर्ण है।

1. **शासने शासनमित्याचक्षते। शासनप्रधाना हि राजानः, तन्मूलत्वात् सन्धिविग्रहयोः।**
2. **तस्मादमात्यसम्पदोपेतः सर्वसमयविदाशुग्रन्थश्चार्वक्षसे लेखवाचनसमर्थो लेखकः स्यात्। सोऽव्यग्रमना राज्ञःसन्देशं श्रुत्वा निश्चितार्थं लेखं विदध्यात्, देशैश्वर्यवंशनामधेयोपचारमीश्वरस्य, देशनामधेयोपचारमनीश्वरस्य।**
3. **अर्थक्रमः, सम्बन्धः, परिपूर्णता, माधुर्यमौदार्यं, स्पष्टत्वमिति लेखसम्पत्।**
4. **तत्र यथावदनुपूर्वक्रिया प्रधानस्यार्थस्य पूर्वमभिनिवेश इत्यर्थस्य क्रमः।**
5. **प्रस्तुतस्यार्थस्यानुपरोधादुत्तरस्य विधानमासमाप्तेरिति सम्बन्धः।**

6. अर्थपदाक्षराणामन्यूनातिरिक्तताहेतूदाहरणदृष्टान्तैरर्थोपवर्ण-
नाश्रान्तपदतेति परिपूर्णता।

7. सुखोपनीतचार्वर्थशब्दाभिधानं माधुर्यम्।

8. अग्राम्यशब्दाभिधानमौदार्यम्।

9. प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वमिति।

10. निन्दा प्रशंसा पृच्छा च तथाख्यानमथार्थना।
प्रत्याख्यानमुपालम्भः प्रतिषेधोऽथ चोदना।।
सान्त्वमभ्यवपत्तिश्च भर्त्सनानुनयौ तथा।
एतेष्वर्थाः प्रवर्तन्ते त्रयोदशसु लेखजाः।।

11. तत्राभिजनशरीरकर्मणां दोषवचनं निन्दा। गुणवचनमेतेषामेव प्रशंसा। कथमेतदिति पृच्छा। एवम् इत्याख्यानम्। देहीत्यर्थना। न प्रयच्छामीति प्रत्याख्यानम्। अननुरूपं भवत इत्युपालम्भः। मा कार्षीः इति प्रतिषेधः। इदं क्रियतामिति चोदना। योऽहं स भवान्, मम यद् द्रव्यं तद्भवतः इत्युपग्रहः सान्त्वम्। व्यसनसाहाय्यमभ्यवपत्तिः। सदोषमायतिप्रदर्शनमभिभर्त्सनम्।

12. अनुनयस्त्रिविधोऽर्थकृतावतिक्रमे पुरुषादिव्यसने चेति।

13. अकान्तिर्व्याघातः पुनरुक्तमपशब्दः संप्लवः इति लेखदोषाः।

14. तत्र कालपत्रकमचारुविषमविरागाक्षरत्वमकान्तिः।

15. पूर्वेण पश्चिमस्यानुपपत्तिर्व्याघातः।

16. उक्तस्याविशेषेण द्वितीयमुच्चारणं पुनरुक्तम्।

17. *लिंगवचनकालकारकाणामन्यथाप्रयोगोऽपशब्दः।*

18. अवर्गे वर्गकरणं वर्गे चावर्गक्रिया गुणविपर्यासः संप्लव इति।

19. सर्वशास्त्राण्यनुक्रम्य प्रयोगमुपलभ्य च।
कौटिल्येन नरेन्द्रार्थे शासनस्य विधिः कृतः।।

**शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च**

| | | |
|---|---|---|
| **शासनम्** | — | शासने शासनमिति, राजा की ओर से लिखित आज्ञा या प्रतिज्ञा का नाम शासन है। |
| **तन्मूलत्वात्** | — | तेषां मूलत्वात् (राजा लोग) उनकी (लिखी बातों के ही), मूल में होने के कारण। |
| **सन्धिविग्रहयोः** | — | सन्धिश्च विग्रहश्च सन्धिविग्रहौ इति तयोः, दो राजाओं का परस्पर किसी बात पर समझौता संधि है, उसके विपरीत विग्रह है। |
| **अमात्यसम्पदोपेतः** | — | अमात्य (मन्त्री - जो मंत्रणा दे) की योग्यताओं वाला। |
| **सर्वसमयविद्** | — | सब समयों (आचार व व्यवहार) को जानने वाला। |
| **आशु ग्रन्थ** | — | शीघ्र ही वाक्य योजना (ग्रंथ ) करने में निपुण। |
| **अव्यग्रमनाः** | — | व्यग्रं मनः यस्य सः, व्यग्रमना,न व्यग्रमना इति अव्यग्रमना, प्रकृतिस्थ (हर्षशोकादि दोषों से परे) मन वाला। |
| **निश्चितार्थम्** | — | स्पष्ट अभिप्राय प्रकट करने वाला (लेख)। |
| **विदध्यात्** | — | कुर्यात्, करना चाहिए। |
| **देशैश्वर्यवंशनामधेयो** | — | (लेख यदि किसी राजा से संबद्ध हो) राजा का, (तब) |
| **उपचारमीश्वरस्य** | — | देश, ऐश्वर्य, वंश व नाम का स्पष्ट उल्लेख (होना चाहिए)। |
| **श्रुतानि** | — | योग्यता। |

ऋद्धि — धन-संपत्ति।

यौनानुबन्धम् — वैवाहिक संबंध।

समीक्ष्य — अवेक्ष्य, देखकर।

पुरुषानुरूपम् — प्राप्तकर्ता (लेख या पत्र प्राप्त करने वाला ), पुरुष के अनुरूप।

अनुपरोधाद् — बाधक न होने पर।

अर्थपदाक्षराणामन्यूनातिरिक्तता — अर्थपद व अक्षरों का न्यूनाधिक्य न होना।

अर्थोपवर्णनाश्रान्तपदता — (दृष्टांत सहित) अर्थ का निरूपण करना और प्रभावहीन शब्दों का प्रयोग न करना।

सुखोपनीतचार्वर्थशब्दाभिधानम् — सुखपूर्वक लाया गया अर्थात् सरल, व सुबोध शब्द का प्रयोग।

अग्राम्य — शिष्ट (शिष्ट शब्दों का प्रयोग करना)।

प्रगीतशब्दप्रयोगः — सुप्रसिद्ध शब्दों का प्रयोग करना।

एतेष्वर्थाः — इन प्रयोजनों में।

प्रवर्तन्ते — प्रकट किया जाता है।

तत्राभिजनशरीरकर्मणाम् — वहाँ (उस लेख में), किसी के वंश, शरीर व कार्य में।

दोषवचनम् — दोषारोपण

कथमेतदिति — यह कैसे हुआ।

एवम् — इसको इस प्रकार कहना चाहिए।

देहि — दीजिए

अननुरूपं भवतः — यह कार्य आपने अपने अनुरूप नहीं किया।

| | | |
|---|---|---|
| **मा कार्षीः** | — | ऐसा मत करो। |
| **व्यसनसाहाय्यम्** | — | आपत्ति के समय सहायता करना। |
| **सदोषमायतिप्रदर्शनम्** | — | दोष दिखाकर धमकी देना। |
| **अनुनयस्त्रिविधः** | — | अनुनय तीन प्रकार का होता है – 1.अर्थकरणनिमित्तक, किसी आवश्यक कार्य को करने के लिए अनुनय किया जाना, 2. अतिक्रमनिमित्तक – किसी कुपित पुरुष को शांत करने के लिए अनुनय करना 3. पुरुषाधिव्यसननिमित्तक – किसी आत्मीय की मृत्यु के कारण आयी हुई विपत्ति में अनुनय करना। |
| **लेखदोषाः** | — | पत्र लेख के दोष। |
| **कालपत्रकम्** | — | मलिन कागज पर लिखना या स्याही पड़े कागज पर लिखना। |
| **अचारु** | — | भद्दे अक्षर (लिखना)। |
| **विषम** | — | छोटे बड़े (अक्षर लिखना)। |
| **विरागाक्षर** | — | फीकी स्याही से लिखना। |
| **पूर्वेण** | — | पहले (लिखे गये लेख) के द्वारा। |
| **पश्चिमस्यानुपपत्तिः** | — | बाद में (लिखे लेख का )विरोध हो जाना। |
| **अन्यथाप्रयोगः** | — | विपरीत प्रयोग। |
| **वर्गकरणम्** | — | विरामादि चिन्हों की व्यवस्था। |
| **गुणविपर्यासः** | — | अर्थक्रम के अनुसार योजना न करना। |
| **अनुक्रम्य** | — | विधिवत् अध्ययन करके। |
| **प्रयोगमुपलभ्य** | — | प्रयोगों की अच्छी तरह परीक्षा करके। |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतभाषया उत्तराणि दीयन्ताम्**
   - क) शासनस्य कः अभिप्रायः?
   - ख) कः लेखकः पत्रलेखने सफलः?
   - ग) कानि तत्त्वानि समीक्ष्य लेखं विदध्यात्?
   - घ) के षड्गुणाः लेखसम्पदो भवन्ति?
   - ङ) लेखप्रयोजनानि कानि?
   - च) के भवन्ति लेखदोषाः?
2. **रिक्तस्थानानाम् पूर्त्तिः क्रियताम्**
   - क) ................ प्रधाना हि राजानः।
   - ख) ................ शब्दाभिधानमौदार्यम्।
   - ग) तत्राभिजनशरीरकर्मणां ................ निन्दा।
   - घ) इदं क्रियतामिति ................।
   - ङ) मा कार्षीः इति ................।
3. **व्याख्यायेताम्**
   - क) अकान्तिर्व्याघातः पुनरुक्तमपशब्दः संप्लवः इति लेखदोषाः।
   - ख) शासनस्य विधिः।
4. **स्पष्टीक्रियन्ताम्**

   अर्थक्रमः, परिपूर्णता, उपालम्भः, माधुर्यम्, पृच्छा।
5. **अस्य पाठस्य उद्देश्यम् स्पष्टीक्रियताम्।**
6. **अस्य पाठस्य पृष्ठभूमौ कः ग्रन्थः अस्ति?**